www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 05 जनवरी 2014 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 05 जनवरी 2014 से 11 जनवरी 2014

पौष शु.–04 ● वि० सं०–2070 ● वर्ष 78, अंक 89, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य समाज (अनारकली) का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली की वार्षिक बैठक बुधवार दिनांक 18–12–2013 को माननीय प्रधान श्री पूनम सूरी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें भारी संख्या में सदस्यों ने भाग लिया। इस बैठक में आर्य समाज की वार्षिक रिपोर्ट एवं वार्षिक आय व्यय का विवरण प्रस्तुत किया गया जिसकी सर्वसम्मति से सम्पुष्टि की गई। वर्ष 2014 के लिए पदाधिकारियों के निर्वाचन में श्री पूनम सूरी जी–प्रधान, श्री अजय सूरी जी, कार्यकारी प्रधान, श्री एच एलभाटिया जी उपप्रधान, श्री ब्रि. ए. के. अदलखा जी मन्त्री, श्री आर.आर. भल्ला सहमन्त्री, श्री रवीन्द्र कुमार जी कोषाध्यक्ष तथा डॉ. चन्द्रप्रभा जी पुस्तकालयाध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। श्रीमती स्नेह मोहन जी को परिसर के रखरखाव का उत्तरदायित्व सौंपा गया।

प्रधान जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आप सभी श्रेष्ठ आर्य बनें और आर्य समाज का तन मन धन से प्रचार करके स्वामी दयानन्द के मूल मन्त्र" कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को सार्थक बनायें। शान्ति पाठ एवं प्रतिभोज से अधिवेशन समाप्त हुआ।

डी.ए.वी. कालेज तथा आर्य समाज फिरोज़पुर शहर ने मनाया महात्मा आनन्द स्वामी जी का जन्म दिवस

डी.ए.वी. कॉलेज फॉर वूमेन, फिरोजपुर कैंट में प्रिंसिपल डॉ. पुष्पिंदर वालिया की अध्यक्षता आर्य जगत् के महान् कर्मठ योद्धा, सत्यनिष्ठ, आदर्श व्यक्तित्व के स्वामी, उपनिषदों के मर्मज्ञ विद्वान् महात्मा आनन्द स्वामी जी का जन्म दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री मनमोहन शास्त्री ने वैदिक मन्त्रोच्चारण से यज्ञ सम्पन्न किया। प्रिंसिपल डॉ. वालिया ने यज्ञ में उपस्थित समस्त छात्राओं को मानवता की साक्षात् मूर्ति महात्मा आनन्द स्वामी जी के जीवन की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि महात्मा आनन्द स्वामी जी को वेदों का और जीवन का बहुत ज्ञान था। जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण बहुत ही सकारात्मक और गहन था। उन्होंने हमें मूल्यों को धारण कर जीवन जीने का मार्ग दिखाया। प्रिंसिपल डॉ. वालिया ने छात्राओं को कॉलेज के पुस्तकालय में संरक्षित महात्मा आनन्द स्वामी जी की पुस्तकों की जानकारी दी। उन्होंने अपने उद्बोधन में छात्राओं से कहा कि उन्हें कॉलेज में आयोजित होने वाले कक्षानुसार साप्ताहिक हवन में महात्मा आनन्द स्वामी जी के वक्तव्यों के प्रेरणात्मक उद्धरणों को पढ़कर सुनाया जाएगा। उन्होंने छात्राओं को पुस्तकालय में जाकर महात्मा जी की पुस्तकों को पढ़ने व उनके बहुमूल्य विचारों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी और कहा कि महात्मा आनन्द स्वामी जी को जान लेना, वेदों को जान लेना है। ऐसे महापुरुष प्रकाश स्तम्भ बन कर युगों तक भावी पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते हैं। इस यज्ञ में आर्य समाज फिरोजपुर शहर के सचिव श्री पवन शर्मा, कॉलेज के समस्त स्टाफ व छात्राओं ने भाग लिया। शान्ति पाठ से यज्ञ सफलतापूर्ण सम्पन्न हुआ।

अर्न्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन डरबन में 251 कुण्डीय यज्ञ के बाद निकली भव्य शोभायात्रा

साउथ अफ्रीका में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेकर कोटा लौटने पर अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि सम्मेलन का स्वामी अग्निवेश, आचार्य बल्देव, डॉ. उषा देसाई व डॉ.राम बिलास ने डरबन महानगर के सिटी हॉल के भव्य सभागार में दीप प्रज्ज्वलित कर एवं प्रार्थना मंत्रों का उच्चारण करते हुए शुभारंभ किया।

विश्व वेद सम्मेलन के अर्न्तगत विद्वानों, संन्यासियों व विशेषज्ञों के प्रवचन हुये जिसमें आर्य समाज का विश्वव्यापी प्रभाव, वेद मंत्रों की व्याख्या हिन्दू एकता तथा वैदिक जीवन पद्धति इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा तथा विचार विमर्श हुआ।

डरबन के उपनगर फीनिक्स में शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य महिला एवं बाल उत्पीड़न के विरोध में आवाज उठाना था।

इस शोभायात्रा में कोटा के अर्जुनदेव चड्ढा भी हैंड माइक संभालते हुये हिन्दी में नारे लगवा रहे थे। "महिलाओं और बच्चों पर उत्पीड़न बंद हो", "बलात्कार बंद हो", "नशा छोड़ो–जीवन मोड़ो", "वैदिक धर्म की जय", "आर्य समाज अमर रहे "इत्यादि नारों से वातावरण गुंजायमान हो रहा था।

शोभायात्रा में व स्थानीय तथा विदेशी आर्य समाजी तथा 1000 से अधिक स्थानीय नागरिक, नारे लगाते हुये चल रहे थे। 5 किलोमीटर की यात्रा पूरी कर शोभायात्रा वापस रायडाल्वेल ग्राउण्ड्स पर समाप्त हुई।

रायडाल्वेल के विशाल ग्राउण्ड में भव्य एवं सुसज्जित पांडाल में 251 कुंडीय महायज्ञ का आयोजन किया गया।

पांडाल में एक भव्य मंच पर सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव सहित व 20 से अधिक संन्यासी वृन्द विराजमान थे। यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. रामविलास ने प्रार्थना मंत्रों के साथ यज्ञ प्रारंभ करवाया। 1000 से अधिक लोग इस यज्ञ में सम्मिलित हुये। पूर्णाहुति के साथ यज्ञ सम्पन्न हुआ।

तत्पश्चात मंच पर उपस्थित विद्वानों के प्रवचन हुये। इसके साथ ही संगीतमय भजनों की प्रस्तुति दी गई।

शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सभी के लिये सामुहिक भोज की व्यवस्था की।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 05 जनवरी, 2014 से 11 जनवरी, 2014

यज्ञ रचा, दान कर

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

न त्वां शतं चन ह्रुतो, राधो दित्सन्तमामिनन्।
यत् पुनानो मखस्यसे।।

ऋग् ९.६१.२७

ऋषिः **अमहीयुः आङ्गिरसः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री**।

● (हे आत्मन्!), (**राधः**) धन को, (**दित्सन्तं**) दान करना चाहते हुए, (**त्वा**) तुझे, (**शतं चन**) सौ भी, (**ह्रुतः**) कुटिल वृत्तियाँ व कुटिल जन, (**अ आमिनन्**) हिंसित अर्थात् मार्ग–च्युत न कर पायें, (**यत्**) जब, (**पुनानः**) (स्वयं को) पवित्र करता हुआ। (तू), (**मखस्यसे**) यज्ञ रचाता है।

● हे पवमान सोम! हे स्वयं को तथा मन, बुद्धि आदि को पवित्र करने वाले सात्विक–वृत्ति जीवात्मन्! जब तू परोपकार का यज्ञ रचाता है और अपना धन किन्हीं सत्पात्र व्यक्तियों को या संस्थाओं को दान देने का संकल्प करता है, तब बहुत–सी कुटिल स्वार्थ–वृत्तियाँ और बहुत–से कुटिल मनुष्य तेरे उस दान–व्रत की हिंसा करना चाहते हैं और तुझे दान के मार्ग से विचलित करने का प्रयत्न करते हैं। स्वार्थ–वृत्ति कहती है कि सहस्त्र, दश सहस्त्र, पचास सहस्त्र, लाख, दो लाख रूपया तुम अन्यों को दान कर कर रहे हो, तो क्या स्वयं भूखे मरना चाहते हो? देखो, सब अपनी सम्पति बढ़ा रहे हैं; जो सहस्त्रपति है वह लक्षपति बन रहा है, जो लक्षपति है वह करोड़पति बन रहा है। उनके पास कई–कई कोठियाँ हैं, मोटरकारें हैं, सेवक हैं। क्या दान का ठेका तुमने ही लिया है? क्या तुम्हारे ही भाग्य में यह लिखा है कि स्वयं तो मोटा–झोटा पहनो, रूखा–सूखा खाओ, झोपड़ी जैसे मकानों में रहो और दूसरों पर धन लुटाओ। पहले अपनी और अपने कुटुम्ब की स्थिति सुधारो, फिर अन्यों की सुध लेना। हे आत्मन्! तू उस स्वार्थ–वाणी को मत सुन। तुझे दान करने के लिए उद्यत देख कई स्वार्थी परिचित मनुष्य भी आकर मिथ्या ही आलोचना करते हैं कि तुम जिस संस्था को दान करने जा रहे हो, उसकी आन्तरिक अवस्था को भी जानते हो? उनमें सब खाऊ–पिऊ बैठे हैं, तुम्हारा दिया हुआ दान उन्हीं के पेट में जाएगा। हे आत्मन्! तू उन उन स्वार्थी जनों के भी कुटिल परामर्श पर ध्यान मत दे। सौ प्रकार की स्वार्थ–भावनाएँ और सौ स्वार्थी–जन भी तुझे तेरे दान के संकल्प से विचलित न कर सकें।

हे मेरे आत्मन्! वेद–शास्त्रों की वाणी सुन, जो तुझे दान के लिए प्रेरित कर रही है। तू अपनी कमाई में से प्रतिदिन या प्रतिमास कुछ निश्चित प्रतिशत दान–खाते में डाल और उसे लोक–कल्याण में व्यय कर। दान से दक्षिणा पानेवाले का तो हित होता ही है, उससे भी अधिक हित और मंगल दाता का होता है, यह वैदिक संस्कृति की भावना है। इसके विपरीत, "अकेला भोग करनेवाला मनुष्य पाप का ही भोग करता है"। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्व-ज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में सृष्टि तत्त्व पर विचार आरम्भ करते हुए स्वामी जी ने पश्चिमी विद्वानों द्वारा प्राप्त किए हुए ज्ञान तथा आविष्कारों को एकांगी बताया और कहा कि आगे आने वाली पीढ़ियाँ आधुनिक प्रकृतिवादी दार्शनिकों की मूर्खता पर हंसेगीं। लुई पैश्चर ने कहा था–जितना अधिक मैं प्रकृति का अध्ययन करता हूँ, उतना ही मैं परमेश्वर के कार्यों को देखकर अधिक चकित हो जाता हूँ।

पश्चिमी विज्ञान प्रकृति (Matter) और गति (Energy) इन दो तत्त्वों को लेकर इठलाता रहा लेकिन संतोष इससे दूर भागता रहा। साम्यवाद और प्रजातन्त्रवाद का लक्ष्य भी केवल धन है। प्रश्न है कि धन ही तत्त्व है क्या? धन से तृष्णा बढ़ती है शान्त नहीं होती। स्वामी जी ने संसार के बड़े–बड़े धनियों की बात बतायी कि उनका अन्त कैसे हुआ। यह कह रहे थे – 'धन बुरी वस्तु नहीः जीवन यात्रा में उसका स्थान है, परन्तु परमतत्त्व धन ही को समझना भारी भूल है

अब आगे.....

संसार–समुद्र को कैसे तरूँ?

पश्चिमी वैज्ञानिकों के भौतिक तत्त्वों के आविष्कारों के परिणाम तथा धन और धनियों के उपद्रवों को देखकर मनुष्य घबरा जाता है। यह सृष्टि का माया–जाल कैसा रच दिया गया है? इससे पार निकल जाने का कोई मार्ग दिखलाई नहीं देता। विवश वह श्री शङ्कराचार्य के शब्दों में पुकार उठता है किः–

कथं तरेयं भवसिन्धुमेतं, का वा गतिर्मे,
कतमोऽस्त्युपायः।
जाने न किंचित्कृपयाव मां भोः!
संसारदुःखक्षतिमातनुष्व।।

(विवेकचूड़ामणि)

'मैं इस प्रकार समुद्र को कैसे तरूंगा? मेरी क्या गति होगी? इसका क्या उपाय है? यह मैं कुछ नहीं जानता। प्रभो! कृपया मेरी रक्षा कीजिए और मेरे संसार–दुःख के क्षय का आयोजन कीजिए।

केवल शंकर भगवान् ही ने भक्त से यह बात नहीं कहलाई, अपितु महर्षि गौतम, कणाद, कपिल, पतंजलि, जैमिनि, व्यास ने जो न्यायदर्शन, वैशेषिक दर्शन, सांख्य–दर्शन, योग–दर्शन, पूर्व–मीमांसा दर्शन और वेदान्त–दर्शन के निर्माता थे, उन्होंने इन ग्रन्थों का निर्माण क्यों किया? उसका मूल कारण तो यही था कि किसी प्रकार दुःखों और चिन्ताओं से पीड़ित संसारी लोगों को दुःखों से मुक्त करके सुखी किया जा सके। यही नहीं, अपितु आयुर्वेद के ग्रन्थ 'सुश्रुत' के कर्त्ता भगवान् धन्वन्तरि ने संसार के शारीरिक दुःखों ही को दूर करने के लिए अपनी 'स्मृति' का निर्माण किया। इन सबसे पूर्व सारी सृष्टि के रचियता और नियन्ता परमेश्वर परमात्मा ने आदिकाल में जिस प्रकार सृष्टि के कल्याणार्थ सूर्य दिया, इसी प्रकार चार वेद दिए। परन्तु वाह रे मनुष्य! तूने अपने इन पथ–प्रदर्शकों ही का नाम ले–लेकर झगड़ना और मतमतान्तरों की रचना प्रारम्भ कर दी। वेदों ही से अनेक भिन्न–भिन्न वाद निकाल लिए। दर्शनों पर तो यह ले–दे हुई कि कुछ न पूछिये! परन्तु मुझे यहाँ इन झगड़ों, मतों अथवा सम्प्रदायों से कोई प्रयोजन नहीं। मेरा अटल विश्वास है कि जब अच्छे दिन आ जायेंगे तो ये सब–के–सब एक ही ब्रह्म के समीप पहुँच जायेंगे। पहुँचना तो एक ही स्थान पर है, नगरी का तो एक ही बड़ा चौक है; चारों दिशाओं से यात्री इस चौक में पहुँचने के लिए दूर–दूर से चलते हैं। मार्ग में नदियाँ भी हैं और वन भी, पर्वत भी और मरुस्थल भी, अपने–अपने सुभीते के अनुसार वे चलते हैं–कोई विशाल मार्ग से, कोई संकीर्ण मार्ग से। यात्री यदि सीधे चलते रहें, मार्ग के वनों तथा पर्वतों में भटक न जाएं तो नगरी के चौक में एक–न–एक दिन पहुँच ही जायेंगे। परन्तु जो मार्ग ही भूल जाय और उलटा ही चलना शुरू कर दे, वह यह तो अवश्य ही समझता रहेगा कि मैं चल रहा हूँ परन्तु वह मंज़िल पर पहुँच नहीं सकेगा. वह तो वनों तथा कन्दराओं में

www.thearyasamaj.org

भटकता रह जायेगा।

भगवान् ने आदिसृष्टि में वेद और तत्पश्चात् ऋषियों, मुनियों व योगियों ने उपनिषद्, दर्शन, स्मृतियाँ इत्यादि संसारी मनुष्यों के पथ–प्रदर्शन के लिए ही दिये थे ताकि वे सन्मार्ग पर चलकर सुख का जीवन व्यतीत कर सकें और अपनी जीवन–यात्रा सफल कर सकें।

इस सारे शास्त्रों के अवलोकन से एक तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि जब तक सृष्टि–विज्ञान का भली प्रकार पता न लग जाय, तब तक वास्तविक तत्त्व तक पहुँचना कठिन होता है। इसीलिए लगभग हर–एक शास्त्र ने पहले इस बात पर प्रकाश डाला है कि यह सृष्टि और सृष्टि के सारे पदार्थ, ये जीवजन्तु और फिर ये मनुष्य, ये सारे लोक, नक्षत्र और नाना जल–स्थल बन कैसे गये?

सृष्टि–उत्पत्ति का विषय कुछ शुष्क–सा प्रतीत होता है, परन्तु वास्तविक तत्त्व की खोज के लिए इसका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए ऋषियों ने इसका वर्णन ज़रूरी समझा और यह है भी बहुत लाभदायक। आप पर जब यह प्रकट हो जाय कि प्रकृति के किस गुण से, किस क्रम से, क्या बना है और हमारे इन्द्रिय और इनके विषय और यह स्थूल भूत किससे निर्मित हुए हैं, तो आपको इनके वश करने में बड़ी भारी सहायता मिल जायेगी और यह प्रसङ्ग अरुचिकर नहीं अपितु रुचिकर हो जायेगा। सृष्टि–विज्ञान को खूब अच्छी तरह बुद्धिपूर्वक समझ लेना ही पर्याप्त नहीं, अपितु इस सारे विज्ञान को हृदयंगम करके फिर समाधि–अवस्था में इन सारे पदार्थों को साक्षात् भी करना आवश्यक है। अतएव इस प्रसंग को पूरा एकाग्रचित्त होकर समझना चाहिए।

विश्व एक पहेली

सौर जगत् का पश्चिमी विद्वान् एडिंगटन (Eddington) इस सृष्टि की अद्‌भुत रचना को देखकर कह उठता है कि–

''मनुष्य का हृदय पुकारता है–यह सब–कुछ क्या है?''

यह विश्व निस्सन्देह एक पहेली है जिसको साधारण वैज्ञानिक तो समझ ही नहीं सकते और माया ही के ऊपर–ऊपर भ्रमण करते थककर बैठ जाते हैं; परन्तु हमारे प्राचीन ऋषियों ने अपनी समाधि

1. 'from the human heart the cry goes up, what is it all about?

अवस्था में इस सारी रचना के रहस्य को देख लिया था। उन्होंने यह सारा विज्ञान जीवों के कल्याण के लिए लेखबद्ध कर दिया और सबसे पूर्व स्वयं भगवान् ने आदि ऋषियों द्वारा जो वेद प्रकट किये, उनमें सृष्टि–विज्ञान का उपदेश दिया है।

वेद में सृष्टि–रचना

भगवान् ही इस रहस्य को खोजने में पूरा समर्थ है क्योंकि वह सृष्टि से पूर्व भी था, अब भी है और सृष्टि के समाप्त हो जाने के पश्चात् भी रहेगा। ऐसा अनन्त, अनादि, सर्वज्ञ भगवान् जीवों के पथ प्रदर्शन के लिए कहता है कि:

तम आसीत्तमसा गूळहमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम्।।

ऋग्. 10.129.3

'यह सब जगत् सृष्टि के पहले अन्धकार से आवृत, रात्रिरूप में जानने अयोग्य, आकाशरूप (आकाश के समान) तुच्छ था, पश्चात् परमेश्वर ने अपने सामर्थ्य द्वारा कारणरूप से कार्यरूप कर दिया।'

तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासीदुपरि स्विदासीत्।
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवतात्प्रयतिः परस्तात्।।

ऋग् 10.129. 5

'तीनों (परमात्मा, जीवात्मा और संसार का मूल कारण प्रकृति) के तेज को मिलाकर एक किरण चारों ओर फैल गया और वह ऊपर नीचे चारों ओर आश्चर्यजनक बन गया। बल का धारण और पोषण करने वाले जीवात्मा अनेक थे। आत्मा में प्रथम से अपनी निज धारणा–शक्ति है और अन्त तक चलने वाला प्रयत्न है।'

वेद पहेली खोलता है

इसी प्रकार ऋग्वेद के और कई मन्त्र हैं और यजुर्वेद के 'पुरुष–सूक्त' में अधिक विस्तार से सृष्टि–विज्ञान पर प्रकाश डाला गया है। 'पुरुष सूक्त' के सारे ही मन्त्र बड़े महत्त्व के हैं परन्तु दो मन्त्रों में विशेष रहस्य प्रकट किये गये हैं। वे दोनों मन्त्र ये हैं:

ओं सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषं पशुम्।।

यजु. 31.15

ओं अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे।
तस्य त्वष्टाविदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे।।

य. 31. 17

इन दो मन्त्रों के अर्थ तथा व्याख्या महर्षि दयानन्द ने इस प्रकार की है:

ईश्वर ने एक–एक लोक के चारों और सात–सात परिधियां ऊपर–ऊपर रची हैं (जो गोल वस्तु के चारों ओर एक सूत से नाप के जितना परिणाम होता है, उसको परिधि कहते हैं)। इस प्रकार ब्रह्माण्ड में जितने लोक हैं, ईश्वर ने एक–एक के ऊपर सात–सात आवरण बनाए हैं– (1) एक समुद्र, (2) दूसरा त्रसरेणु, (3) तीसरा मेघमण्डल का वायु, (4) चौथा वृष्टिजल, (5) पांचवां वृष्टिजल के ऊपर एक प्रकार का वायु, (6) छठा अत्यन्त सूक्ष्म वायु जिसको धनञ्जय कहते हैं, (7) सातवां सूत्रात्मा वायु जो धनञ्जय से भी सूक्ष्म है। ये सात परिधियां कहलाती हैं।

1. लोक एक ही नहीं, पृथिवी, द्यौ, और अन्तरिक्ष का वर्णन तो बहुत आता है, फिर सप्त तोक भी वर्णित हुए हैं। 14 भुवनों के नाम भी सुनाई देते है। ये लोक–परलोक कितने हैं, कहाँ हैं, इनका विस्तार कितना है, अभी पूरा तो क्या, अधूरा ज्ञान भी नहीं हो सका। बृहदारण्यक उपनिषद् ही में याज्ञवल्क्य ने गार्गी से संवाद करते हुए नौ लौकों का वर्णन किया है: अन्तरिक्षलोक, गन्धर्वलोक, आदित्यलोक, चन्द्रलोक, नक्षत्रलोक, देवलोक, इन्द्रलोक, प्रजापति लोक, ब्रह्मलोकः और फिर इन सब लोकों को आकाश में बतलाया गया है। इसी प्रकार सप्त द्वीप, सप्त समुद्र, सप्त लोक और सप्त पाताल का भी वर्णन पाया जाता है, वह इस प्रकार है:–

सप्त द्वीप– जम्बु, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, कौंच, शाक, पकर।

सप्त समुद्र– लवणोद, ऐक्ष्वोद, घृतोद,क्षारोद, दधि मण्डोद, स्वादूदक।

सप्तलोक– भूः, भुः, स्वः, महः, तपः, सत्यम्।

सप्त पाताल–अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, और पाताल।

इनके साथ 14 भुवनों और नव द्वीपों का भी वर्णन आता है। भुवन या लोक सात ऊपर, सात नीचे बतलाये जाते हैं। फिर भूगोल के अन्तर्गत जो अनेक उपलोक हैं वे हमारी पृथिवी की अपेक्षा बहुत अधिक सूक्ष्म कहे जाते हैं। यदि इस ब्रह्माण्ड पर दृष्टि डाली जाय और इसके 14 भुवनों, 6 द्वीपों 6 अन्य विभागों और तीन लोकों में अपनी पृथिवी को देखा जाय तो यह सारे ब्रह्माण्ड का एक बटा ग्यारह सौ छिहत्तरवाँ अंश है और इसके जो नौ विभाग हैं उनमें से एक विभाग वह आर्यावर्त देश है जो अब सिकुड़ते–सिकुड़ते भारत रह गया है। इतने विशाल संसार में एक जीव का स्थान कितना है यह भी देख लीजिये।

सृष्टि–उत्पत्ति का विषय कुछ शुष्क–सा प्रतीत होता है, परन्तु वास्तविक तत्त्व की खोज के लिए इसका ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए ऋषियों ने इसका वर्णन ज़रूरी समझा और यह है भी बहुत लाभदायक। आप पर जब यह प्रकट हो जाय कि प्रकृति के किस गुण से, किस क्रम से, क्या बना है और हमारे इन्द्रिय और इनके विषय और यह स्थूल भूत किससे निर्मित हुए हैं, तो आपको इनके वश करने में बड़ी भारी सहायता मिल जायेगी और यह प्रसङ्ग अरुचिकर नहीं अपितु रुचिकर हो जायेगा। सृष्टि–विज्ञान को खूब अच्छी तरह बुद्धिपूर्वक समझ लेना ही पर्याप्त नहीं, अपितु इस सारे विज्ञान को हृदयंगम करके फिर समाधि–अवस्था में इन सारे पदार्थों को साक्षात् भी करना आवश्यक है। अतएव इस प्रसंग को पूरा एकाग्रचित्त होकर समझना चाहिए।

इस ब्रह्माण्ड की सामग्री (त्रिः सप्त समिधः) इक्कीस प्रकार की कहाती है जिसमें से (1) पहला प्रकृति, बुद्धि और जीव ये तीनों मिलके हैं क्योंकि ये तीनों अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थ हैं। (2) दूसरा श्रोत्र। (3) तीसरा त्वचा। (4) चौथा नेत्र। (5) पांचवां जिह्वा। (6) छठा नासिका। (7) सातवां वाक्। (8) आठवां पग। (9) नवमा हाथ। (10) दशमी गुदा। (11) ग्यारवां उपस्थ, जिसको लिंग कहते हैं। (12) बारहवां शब्द। (13) तेरहवां स्पर्श। (14) चौदहवां रूप। (15) पन्द्रहवां रस। (16) सोलहवां गन्ध। (17) सत्रहवां पृथिवी। (18) अठारहवां जल। (19) उन्नीसवां अग्नि। (20) बीसवां वायु। (21) इक्कीसवां आकाश। ये इक्कीस समिधा कहाती हैं। जो परमेश्वर पुरूष इस सब जगत् का रचने वाला, सबको देखने वाला और पूज्य है, उसी का विद्वान लोग ध्यान करते हैं। उसी के ध्यान में अपनी आत्माओं को दृढ़ बांधने से कल्याण जानते हैं।। 15।।

उस पुरुष परमात्मा ने पृथिवी की उत्पत्ति के लिए जल के सारांश रस को ग्रहण करके तथा पृथ्वी और जल के परमाणुओं को मिलाके पृथ्वी रची है। इसी प्रकार अग्नि के सारांश को इकट्ठा करके तथा अग्नि के परमाणुओं के साथ–साथ जल के परमाणुओं को मिलाके जल को, वायु के सारांश को एकत्रित करके तथा वायु के परमाणुओं के साथ अग्नि के परमाणुओं को मिलाके अग्नि को, आकाश के पश्चात् वायु के परमाणुओं से वायु को, जगत् के आदि कारण प्रकृति से आकाश को–जो कि सभी तत्त्वों का ठहरने का स्थान है, रचा। ये सब पदार्थ ईश्वर ने रचे हैं अतः उसका नाम विश्वकर्मा है। जगत् जब उत्पन्न नहीं हुआ था तब वह ईश्वर के सामर्थ्य (वश) में कारणरूप से वर्तमान था। ईश्वर जब–जब अपने सामर्थ्य से इस कार्यरूप जगत् को रचता है तब–तब कार्य–जगत् गुणवाला होके स्थूल बनके देखने में आता है। जब परमेश्वर ने मनुष्य–शरीर आदि को रचा है, तब मनुष्य भी दिव्य कर्म करके देव कहलाते हैं। ईश्वर की आज्ञा है कि जो मनुष्य उत्तम सकाम कर्म में शरीर आदि पदार्थों को जलाता है वह संसार में उत्तम सुख पाता है और जो परमेश्वर ही की प्राप्तिरूप मोक्ष की इच्छा करके उत्तम निष्काम कर्म, उपासना और ज्ञान–पुरूषार्थ करता है वह उत्तम देव कहलाता है।। 16।।

www.thearyasamaj.org

वेद अपौरुषेय एवं ईश्वरीय ज्ञान है

● श्री हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

जैसे सृष्टि के बीज रूपी परमाणुओं को किसी वैज्ञानिक ने उत्पन्न नहीं किया उसी प्रकार वेदों के बीजात्मक ज्ञान को किसी ऋषि ने उत्पन्न नहीं किया क्योंकि वह ईश्वरीय है, और उसकी ईश्वरीयता तभी सिद्ध हो सकती है जब उसे सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है के रूप में ध्यान में रखते हुए उसके मंत्रों का भाष्यआचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जैसा किया जाएगा।

हमारे आचार्य जी 'वैदिक सम्पदा' में लिखते हैं कि "यह सृष्टि की सम्पूर्ण रचना जिसके ज्ञान से रची हुई है और संचालित है उसकी विविध स्थितियों के विविध तत्त्वों, राशियों और पिण्डों का ज्ञान कराने वाला वह शब्दमय मंत्र भी उसी जगत् रचियता का ही है, जो इस मानव देह में हमारी ध्वनियों से प्रारम्भ हुआ। अतः जिन मानव ऋषियों के माध्यम से वह वेद ज्ञान, वर्ण या ध्वनि रूप में प्रकट हुआ उसके रचयिता वे मानव देहधारी ऋषि स्वयं नहीं थे, वे तो उसके अभिव्यंजक प्रकटकर्ता, दूत या माध्यम मात्र ही थे। इसलिए कभी किसी ऋषि ने यह नहीं घोषित किया कि मैंने ऋग्वेद बनाया, मैंने यजुर्वेद बनाया या मैंने सामवेद बनाया। ऋषि मुख से तो यही ध्वनि प्रकट हुई कि–

'तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे, ।छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत।। (ऋ0 10, 90, 9) (यजु0 31, 7) अथर्व0 19, 6, 13)

अर्थात्–उसी पूजनीय सर्वोपास्य, परमात्मा से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अर्थववेद उत्पन्न हुए हैं।

किन्तु महभारत युद्ध के पश्चात मध्यकालीन भाष्यकार सायण जो मुसलमानी समय में हुआ था।उसके भाष्य में पौराणिक छाया थी और महीधर तान्त्रिक था, दोनों ने वेद–भाष्य करते समय निरुक्त का सहारा नहीं लिया, दोनों ने प्रचलित संस्कृत के नियमों से ही वेदार्थ किया। वेदों के शब्द यौगिक हैं और उनके वास्तविक अर्थ तभी प्राप्त हो सकते हैं जब उन्हीं नियमों में उनका अर्थ किया जाता है। इन दोनों ने पाणिनीय व्याकरण, निरुक्त तथा निघण्टु की उपेक्षा की। जिन मंत्रों का उपनिषद तथा ब्राह्मण ग्रन्थकारों ने अर्थ कर दिया था उन अर्थो की भी उन्होंने अवज्ञाकर पौराणिक एवं तान्त्रिकों जैसा अर्थ किया। यथा–कहीं–कहीं अश्लीलता, लम्पटता, मांसाहार, गो–हत्या, मदिरापान, पशु–बलि, नरबलि आदि पाप दोषों से पूर्ण। इसके अलावा मैक्समूलर ने तो आर्यो की सभ्यता को नीचे गिराने में कोई कसर नहीं छोड़ी वेद मंत्रों को गरड़ियों का गाना और बहुदेववाद बताया, जिसका लाभ अंग्रेज इतिहासकारों ने उठाया।

अतः देसी–विदेशी दोनों भाष्यकारों ने इस विद्या की पुस्तक वेद को साधारण पुस्तकों की कोटि से भी गिरा दिया। उस समय लोग सब सायण आदि के वेदभाष्य को ही सही मानने लगे। मंत्र का पूर्ण बोध न होने के कारण ज्ञानी लोग भी वेद विरूद्ध अन्ध परम्पराओं को ही सत्य मानकार विश्वास करने लगे।

ऐसे में जब ऋषि दयानन्द गुरु विरजानन्द की कुटिया में पहुँचे तब वेदों के व्याकरण अष्टाध्यायी, निघण्टु आदि का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात ऋषि ने देखा कि वेदार्थ को समझने के लिए जो निरुक्त निघण्टु तथा ब्राह्मण ग्रन्थ हैं– बिना उसके सायण, महीधर आदि ने वेदों के सही अर्थ समझने में बड़ी भूल की है। तब उस समय ऋषि दयानन्द ही ऐसे महापुरुष थे जो जिन्होंने निर्मय होकर प्रबल स्वर में कहा–वेदों का अनर्थ किया गया है। वेद विद्या की पुस्तक है इसे सिद्ध करने के लिए उसके सत्यार्थ को सबके सामने रख दी और सबकी आँखे खोल दीं।

(आर्यावर्त) भारत के किसी पण्डित ने यह साहस नहीं दिखाया कि सायण आदि के अर्थ को एक ओर रखकर वेदों का ठीक अर्थ करें। ब्राह्मण लोग भी विचार शक्ति से हीन थे, उन लोगों को वेदों से मतलब नहीं था अपने पुराणों से मतलब था उसी के सब लकीर के फकीर बने हुए थे। किसी में योग्यता नहीं थी।

ऐसे में जब ऋषि दयानन्द गुरु विरजानन्द की कुटिया में पहुँचे तब वेदों के व्याकरण अष्टाध्यायी, निघण्टु आदि का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात ऋषि ने देखा कि वेदार्थ को समझने के लिए जो निरुक्त निघण्टु तथा ब्राह्मण ग्रन्थ हैं– बिना उसके सायण, महीधर आदि ने वेदों के सही अर्थ समझने में बड़ी भूल की है। तब उस समय ऋषि दयानन्द ही ऐसे महापुरुष थे जो जिन्होंने निर्मय होकर प्रबल स्वर में कहा–वेदों का अनर्थ किया गया है। वेद विद्या की पुस्तक है इसे सिद्ध करने के लिए उसके सत्यार्थ को सबके सामने रख दी और सबकी आँखे खोल दीं।

उसी प्रकार आज आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने जिन वेद मंत्रों का अश्लील गंदा भाष्य किया गया था उसी मंत्र को उन्होंने 'आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक भाष्य करके सिद्ध कर दिया है कि वेदों के सभी मंत्र ईश्वरीय होने से विविध–विद्याओं से युक्त हैं।

आचार्य सायण का भाष्य

'न सेशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्याऽकपृ

हे इन्द्र स जनो नेशे मैथुनं कर्तुं नेष्टे न शक्नोति यस्य जनस्य कपृच्छेपः सक्थ्या सक्थिनी अन्तरा रंबते लम्बते। सेतस एव स्त्रीजन ईशे मैथुनं कर्तु शक्नोति य स्य जनस्य निषेदुषः शयानस्य रोमशमुपस्थं विजृम्भते विवृतंभवति। यस्य च पतिरिंद्रोविश्वस्मादुत्तरः।।6।।

उनका यह भाष्य अश्लील होने से आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक ने इसका हिन्दी अनुवाद करना उचित नहीं समझा।

उसी मंत्र का आधिदैविक भाष्य का जो आचार्य जी ने भावार्थ लिखा है उसी को मैंने लिखा है। लेख बढ़ जाने से उनके भाष्य को नहीं लिखा।

(1) भावार्थ– जब सूर्य के केन्द्रिय भाग व बहिर्भाग को जोड़ने वाली दृढ़ स्तम्भ रूपी उत्तरी व दक्षिणी प्राणधाराएँ मन्द हो जाती हैं, तब सूर्य के दोनों भागों में संतुलन खोकर सूर्य का अस्तित्व संकट ग्रस्त हो सकता है और जब वे दोनों धाराएँ विशेषरूप से सक्रिय व सशक्त होती हैं, तब सूर्य का सन्तुलन उचित प्रकार से बना रहता है।

उसी मंत्र का 'आधिभौतिक' भाष्य का भावार्थ–

राजा को चाहिए कि वह सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए अनुकूल वचनों से युक्त होकर अपनी प्रजा के मध्य पनप रहे रागद्वेष जन्म असन्तोष एवं संघर्ष को दूर करने का सतत प्रयत्न करे साथ ही अपने बल व धन का सम्पूर्ण प्रजा के हित में यथायोग्य नियोजन करे।

(1) उसी मंत्र का केवल आध्यात्मिक भाष्य एवं भावार्थ लिख रहा हूं–

(यस्य) जिस विद्वान पुरूष का (कपृत) मन एवं सुखकारी प्राणों का समूह (सकथ्याअन्तरा) रागद्वेषादि द्वन्द्वों में आसक्ति एवं कोलाहल के मध्य (रम्बते) चिपकाया रहता है अर्थात् उन्हीं में रत रहता है (न स ईशे) वह अपनी इन्द्रियों पर शासन नहीं कर सकता, बल्कि (यस्य निषेदुषः रोमशम्) दृढ़ व ब्रह्मवर्चस् से तेजस्वी होकर अपने अन्तःकरण को प्रणव तथा गायत्र्यादि छन्द रुप वेद की पवित्र ऋचाओं में प्रशस्त रूप से रमण करते हुए (विजृम्भते) स्वयं को परमपिता सुखस्वरूप परमेश्वर के आनन्द में विस्तृत कर देता है (स इत् ईशे) वही योगी पुरूष अपनी इन्द्रियों पर शासन कर पाता है। (विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः) ऐसा जितेन्द्रिय विद्वान अन्य प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ होता है। (भाष्य, ऋ0 10, 86, 16)

भावार्थ–विद्वान पुरूष को चाहिए कि अपने को योगयुक्त करके परमपिता परमात्मा में रमण करने के लिए अपने अन्तःकरण को रागद्वेषादि द्वन्द्वों से हटाकर प्रणव तथा गायात्र्यादि ऋचाओं के विधिपूर्वक जप द्वारा परमेश्वर की उपासना करने हेतु अपनी इन्द्रियों पर जय प्राप्त करे।

तात्पर्य यह है कि वैदिक संस्कृत का बहुत बड़ा विद्वान ही वेदों का सही भाष्य कर सकता है और जब तक वेदों के मंत्रों का उत्तम भाष्य नहीं होगा तब तक उसकी ईश्वरीयता सिद्ध नहीं हो सकती।

जिन–जिन वेद मंत्रों का सायण, महीधर, उब्वट और मैक्समूलर तथा कतिपय–पण्डितों ने 'अश्लील–गंदा, पशुबलि, मांसाहार, गो–हत्या, मद्यपान, तस्कर, बहुदेववाद एवं जादू–टोना आदि जैसा भाष्य ऋषि दयानन्द के सिद्धांत विरूद्ध किया गया है। उन सबका संशोधन उसी प्रकार होना चाहिए जिस प्रकार 'वेद विज्ञानाचार्य' अग्निव्रत नैष्ठिक चाहते हैं।

–मु. पो. मुरारई, जिला वीरभूमि
(प. बंगाल)

www.thearyasamaj.org

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द

● महात्मा चैतन्यमुनि

संसार में अधिकतम लोग तो अपने अमूल्य जीवन को पशुओं के समान खाने-पीने, सोने, अपने से बलवान् से डरने तथा अपने से कमजोर को डराने और संतान पैदा करने में ही व्यतीत कर देते हैं और फिर एक दिन मर जाते हैं। कुछ अन्य धर्म के नामलेवा मात्र तो होते हैं मगर उनके जीवन में धर्म की व्यावहारिकता नहीं होती है। जिन्होंने केवल बाहरी आडम्बर और दिखावे को ही धर्म मान रखा होता है। कुछ ऐसे भी होते हैं जो शास्त्रोक्त धर्म का अक्षरशः अनुपालन करके अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं। इन सबसे ऊपर, चाहे बहुत कम संख्या में ही सही कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो तप, त्याग एवं अद्भुत प्रतिभा से अपने जीवन को सवाँकर समूचे विश्व एवं पूरी मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर देते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक ऐसे ही दिव्य महापुरूष थे जिन्होंने अपने जीवन को अत्यन्त पतनावस्था से ऊपर उठाकर अपने आपको देश, धर्म और मानव-मात्र की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। उनके गुरू महर्षि दयानन्द जी ने आर्यसमाज जैसी सार्वभौमिक एवं दिव्य संस्था के जो दस नियम बनाए, स्वामी जी उन नियमों को अक्षरशः जीवन में कार्यान्वित करने वाले महानात्मा थे। उन्होंने जीवन की पगडण्डियों में भटकाव के भँवर भी देखे थे मगर जब महर्षि दयानन्द रूपी पारसमणी से उनका सम्पर्क हुआ तो वे सर्वात्मना कुन्दन बन गए और जीवन की उन ऊँचाईयों को छुआ जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था महर्षि जी के सम्पर्क में आकर वे न केवल आस्तिक बने बल्कि उनके समूचे जीवन का कायाकल्प ही हो गया.....

जिला जालन्धर के पूर्वी कोने पर सतलुज नदी के किनारे तलवन नाम का एक उपनगर है जहाँ लाला नानकचन्द जी के घर 23 फरवरी, सन् 1857 को एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम तो बृहस्पति रखा गया मगर यह बालक मुन्शीराम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इन्हीं मुन्शीराम जी ने बाद में स्वामी श्रद्धानन्द नाम से ख्याति अर्जित की मुन्शीराम की पढ़ाई विधिवत् नहीं हो पाई तथा उन पर कुसंगति का प्रभाव भी धीरे-धीरे पड़ने लगा। रही-सही कमी अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने पूरी कर दी और मुन्शीराम के आचार-विचार पूरी तरह से दूषित होते चले गए। यह देखने में आया है कि अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त अधिकतम व्यक्ति अपनी संस्कृति और संस्कारों से दूर हो जाते हैं। वे स्वयं लिखते हैं- 'मैनें भी उसी विद्यालय में शिक्षा पाई थी जिसने हिन्दू युवकों को अपनी प्राचीन संस्कृति का शत्रु बना दिया था।' कुसंगति के कारण ही मुन्शीराम मांस, मदिरा, जुआ, शतरंज, हुक्का तथा दुराचारादि, व्यसानें में फंस गए। कुछ घटनाएं ऐसी भी हुई जिनके कारण उन्हें मत, मजहब, आदि से घृणा हो गई तथा उनके भीतर नास्तिकता के भाव घर कर गए। श्रावण 14, संवत् 1936 के दिन योगीराज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी बरेली पधारे। अपने पिता लाला नानकचन्द जी के कहने पर मुन्शीराम अनमने भाव से महर्षिजी को सुनने गए और उनसे अनेक शंकाओं का समाधान करके न केवल आस्तिक बने बल्कि समस्त दुरितों को त्यागकर तपस्वी जीवन जीने लगे। अपनी पुस्तक 'कल्याण-मार्ग का पथिक' के प्रारंभ में ही ऋषि-दयानन्द के चरणों में सादर समर्पण' के अन्तर्गत महर्षि के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की है। मुन्शीराम जी के जीवन पर उनकी पतिव्रता धर्मपत्नी श्रीमती शिवदेवी जी की भी प्रेरणा एवं सहयोग रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सत्संग से मुन्शीराम जी की जो आत्मा आस्तिकता की ओर उद्‌बुद्ध हुई थी, शिवदेवी जी के सेवा एवं सहयोग ने उनकी कलुषित आत्मा को पूरी तरह से झकझोर कर रख दिया। उन्होंने मांस-भक्षण तथा मदिरापान आदि का त्याग कर दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द जी स्वयं में बा इतिहास थे। उनके जीवन का कार्यक्षेत्र इतना विशाल एवं बहुआयामी था कि उनके सामर्थ्य पर आश्चर्य होता है। वे अत्यधिक आत्मविश्वासी, निर्भीक एवं उत्साही ही नहीं थे बल्कि सच्चे ईश्वर-भक्त, देश-भक्त एवं समाज-सेवक भी थे। उनका दृष्टिकोण मानवतावादी एवं सार्वभौमिक था मगर जहाँ देशहित की बात आती थी तो देश की अस्मिता उनके लिए सर्वोपरि हो जाती थी। वे संकुचित जातिवाद, मत-मजहबवाद, क्षेत्रवाद आदि भावनाओं से एकदम मुक्त थे। यही कारण है कि वे मानव-मात्र के माध्यम से भाई-चारे का सन्देश दिया था गुरु का बाग आन्दोलन में उनकी प्रमुख भूमिका रही है जलियांवाला बाग के हत्याकाण्ड के बाद जब समूचा देश सहमा हुआ था तो ये ही थे जिन्होंने कांग्रेस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष-पद स्वीकार करने का साहस किया था गोरे सैनिकों की संगीनों के समक्ष छाती तानकर खड़ा होने वाला यह साहसी वीर अकल्पनीय है गोरक्षा, हिन्दी प्रचलन और शुद्धि आन्दोलन की कड़ी बनना उनके जीवन का एक अत्यधिक महत्वपूर्ण अंग था क्योंकि यही हमारी राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का आधार-भूत सूत्र था और हैं शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंनें जो कार्य किया वह अपने आम में बहुत ही सार्थक एवं अनुपम है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जिस शिक्षा-पद्धति का प्रचलन अनिवार्य माना था, स्वामी जी ने उसे व्यावहारिक रूप देने के लिए कितना तप और त्याग किया यह इस बात से स्पष्ट होता है कि 3 अक्तूबर, 1897 को जालन्धर में एक बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मति से गुरूकुल खोलने का निर्णय लिया गया। मुन्शीराम जी ने प्रतिज्ञा की कि जब तक वे गुरूकुल के लिए तीस हजार रूपाए एकत्रित नहीं कर लेते, वे घर में पैर नही रखेंगे। इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के मार्ग में अनेक बधाएँ आई मगर धुन के धनी एवं दृढ़-निश्चयी मुन्शीराम जी ने तीस हजार के स्थान पर चालीस हजार रूपए एकत्रित कर लिए। अप्रैल 8, सन् 1900 तक चालीस हजार रूपए की राशि एकत्रित हो जाने पर अर्यासमाज लाहौर में एक बड़ा उत्सव मनाया गया, मुन्शीराम जी का जलूस निकाला गया, उन्हें अभिनन्दित किया गया तथा उन्हें महात्मा की पदवी से विभूषित किया गया। महात्मा जी ने अपनी वकालत का परत्याग कर दिया और अपने दोनों पुत्रों को सर्वप्रथम गुरूकुल में पढ़ने के लिए भेजा। उन्होंने न केवल अपना पुस्तकालय बल्कि 'सद्धर्म प्रचारक प्रैस' भी जीसकी कीमत उस समय आठ हजार से कन न थी, गुरूकुल के चरणों में चढ़ा दी। यही नहीं त्यागमूर्ति महात्मा जे ने तीस हजार से अधिक रूपया लगाकर बनाई हुई जालन्धर की कोठी भी गुरूकुल को अर्पित कर दी। नजीबाबाद के रईस चौधरी मुन्शी अमनसिंह जी ने अपना कांगड़ी ग्राम और उसके आस-पास की 1200 बीघा भूमि गुरूकुल के को दान करके अपना नाम सदा के अलए अमर कर लिया। कठोर परिश्रम से कुछ झोपड़ियों का निर्माण करक विधिवत् गुरूकुल का शुभारंभ हो गया। महात्मा मुन्शीराम जी को ही गुरूकुल का मुख्याधिष्ठाता नियत किया गया। गुरूकुल के लिए महात्मा जी ने खुन-पसीने से सींचने वाली उक्ति को चरितार्थ किया।

सन 1926 में कराची की असगरी बेगम नाम की एक मुसलमान स्त्री अपने दो बच्चों और भतीजे के साथ दिल्ली आर्यसमाज में आई और उसने आर्य धर्म स्वीकार करने की इच्छा प्रकट की तथा उसकी इच्छानुसार उसका 'शुद्धि-संस्कार' करके शन्तिदेवी नाम रखा गया। लगभग तीन महीने के बाद उसके पिता मौलवी ताजमुहम्मद खां उसे खोजते हुए दिल्ली आए। कुछ दिनों के बाद उसके पति अब्दुल हलीम भी आए। उन्होंनें शन्तिदेवी से पुनः इस्लाम कबूल करके वापस चलने का आग्रह किया मगर उसने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। इस पर शान्तिदेवी के पति ने स्वामी जी पर फौजदारी का एक मुकद्दमा चला दिया। मिस्टर लुइस सिटी मजिस्ट्रेट ने अपने चैम्बर में शान्तिदेवी को बुलाकर एक घण्टा भर बातचीत की, परन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला और मजिस्ट्रेट ने मुकद्दमा खारिज कर दिया। इससे मुसलमान भड़क उठे। शान्तिदेवी के पिता ने स्वामी जी के पास आकर धमकी दी कि- 'हम पठान लोग हैं, जिनके लिए खून व कत्ल करना बहुत सरल है।' स्वामी ने तुरन्त अपनी कुर्सी से खड़े होकर कहा- 'मैं तो हथेली पर सिर लिए घूमता हूँ।' आठ दिसम्बर, 1926 को स्वामी जी गुरूकुल गए और अत्यधिक ठण्ड के कारण उन्हें ब्रांको-निमोनिया हो गया। 23 दिसम्बर, 1926 को सेवक धर्मसिंह ने सीढ़ियों से किसी युवक को आते हुए देखा उसने उसे रोकना चाहा मगर स्वामी जी ने आवाज सुन ली तथा धर्मसिंह से कहा कि कौन है? इसे आने दो। अब्दुल रसीद नामक उस मुस्लिम युवक ने आकर स्वामीजी से कहा कि वह उनसे इस्लाम के मुतल्लिक कुछ बातचीत करना चाहता है। स्वामी जी ने कहा कि भाई, मैं बीमार हूँ तुम्हारी दुआ से स्वस्थ हो जाऊँगा तो बातचीत करूँगा। तभी उस युवक ने पानी माँगा और स्वामी जी के आदेश पर धर्मसिंह पानी लेने बाहर गया। इधर उस दुष्ट युवक ने मसनद के सहारे बैठे हुए स्वामी जी पर तीन गोलियाँ चला दीं। धर्मसिंह आगे बढ़ा तो उसकी टाँग पर भी एक गोली चला दी वह हत्यारा वहाँ से भागना ही चाहता था कि स्वामी जी के मन्त्री पण्डित धर्मपाल जी ने आकर उसे दबोच लिया। पुलिस ने आकर उस युवक को पकड़ लिया मगर इधर युगपुरूष स्वामी श्रद्धानन्द जी की अद्भुत जीवन यात्रा का शाम के लगभग चार बजे अवसान हो गया।

आज हमारे संगठन की क्या स्थिति है यह बात सर्वविदित ही है मगर एक वह भी समय था जो आर्यसमाज का स्वर्ण-युग कहलाता है। कोई भी युग अपने -आप में अच्छा या बुरा नहीं होता बल्कि उस युग के व्यक्ति ही उस युग को स्वर्णिम बनाते हैं। वह स्वर्ण-युग था क्योंकि उस समय हमारे पास लाला लाजपतराय जैसे निर्भीक एवं ओजस्वी व्यक्ति थे। वैदिक-धर्म की बलिवेदी पर तिल-तिल होकर जलने वाले पण्डित गुरूदत्त जैसे तपस्वी थे। अपना सर्वस्व न्योच्छावर करने वाले अद्भुत

शेष पृष्ठ 7 पर ☞

www.thearyasamaj.org

नासदीय सूक्त – ऋग्वेद

● शिवनारायण उपाध्याय

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 129 को नासदीय सूक्त कहा जाता है। इसके ऋषि प्रजापति परमेष्ठी तथा देवता भाववृत्तम हैं। सूक्त में कुल सात ऋचाएँ हैं। प्रारम्भिक तीन ऋचाओं में प्रागवस्था या प्रलयावस्था का वर्णन हुआ है। अगली दो ऋचाओं में सृष्टि उत्पत्ति के क्रम को बताया है। छठी ऋचा में कहा गया है कि यह सृष्टि कैसे बनी इसे कोई भी व्यक्ति नहीं जानता है क्योंकि जब सृष्टि उत्पन्न हो रही थी तब इसे देखने वाला कोई व्यक्ति नहीं था। मानवी सृष्टि तो सबके अन्त में हुई। फिर सातवीं ऋचा में कहा गया है कि कोई व्यक्ति यह तो जानता नहीं है कि यह सृष्टि कब और कैसे उत्पन्न हुई है परन्तु इसे उत्पन्न करने वाला ईश्वर तो इसे जानता ही है और उसने वेद के माध्यम से यह बात विद्वानों को बता दी है।

अब हम इस विषय को सूक्त की ऋचाओं के आधार पर ही पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। वर्तमान वैज्ञानिक यह तो बता रहे हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति Bing Bang या महान् विस्फोट के साथ प्रारम्भ हुई परन्तु Bing Bang के पूर्व क्या स्थिति थी इसे वे नहीं बता पा रहे हैं। केवल वे यह बताते हैं कि Bing Bang से पूर्व सम्पूर्ण सृष्टि शून्य आयतन तथा अनन्त अपेक्षित घनत्व में समाई हुई थी। साथ ही वे यह भी कहते हैं कि Bing Bang से पूर्व की स्थिति को जानने की कोई आवश्यकता भी नहीं है। सृष्टि उत्पत्ति को जान लेने के बाद प्रकृति के नियमों के आधार पर हम भविष्य के लिए जो कुछ भी घोषणा करते हैं वह ठीक ही निकलती है। परन्तु नासदीय सूक्त में Bing Bang से पूर्व की स्थिति को भी स्पष्ट रूप से बता दिया गया है, आइए उसे देखते हैं –

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परोयत्।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद् गहनं गभीरम्।। ऋ. 10.129.1

पदार्थ – (तदानीम्) सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व (न) न (असत्) अभाव अथवा असत्ता (आसीत्) होता है और (न) न (सत्) व्यक्त जगत् (आसीत्) रहता है। (न) न (रजः) लोक रहता है और (नो) न (व्योमा) अन्तरिक्ष (आसीत्) रहता है (यत्) जो आकाश से (परः) ऊपर––नीचे, लोक–लोकान्तर हैं वे भी नहीं रहते हैं। (किम्) क्या (आवरीवः) किसको घेरता वा आवृत करता है सब कुछ (कुहकस्य) कुहारान्धकार के (शर्मन्) आवरण में रहता है (गहनम्) गहन (गभीरम्) गहरा (अम्भः) जल (किम्) क्यों (आसीद्) रह सकता है।

भावार्थ–सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व की स्थिति का वर्णन करते हुए ऋचा में कहा गया है कि उस समय न तो व्यक्त जगत् रहता है और न अभाव रहता है इसका अर्थ यह हुआ कि प्रलयावस्था में व्यक्त तो कुछ रहता ही नहीं है परन्तु सृष्टि के मूल कण तथा जीवात्मा अपनी कारणावस्था में अवश्य रहते हैं। यदि प्रलयावस्था में कुछ भी व्यक्त और अव्यक्त पदार्थ नहीं है तो फिर सृष्टि की उत्पत्ति कैसे होगी। गीता में भी इसलिए कहा गया है कि – **'नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः'** जो है उसका विनाश नहीं होता है और जो नहीं है उससे कुछ बन भी नहीं सकता है। विज्ञान की मान्यता भी यही है। किसी भी प्रक्रिया में ऊर्जा की मात्रा में कोई अन्तर नहीं आता है अर्थात् ऊर्जा नष्ट नही होती है। ऋचा का भी यही कहना है। उस समय न यह अन्तरिक्ष रहता है और न कोई उसके ऊपर नीचे कोई लोक लोकान्तर रहता है। उस समय कौन किसको घेरे? सब कुछ कुहरे के अन्धकार में समाया रहता है। अगली ऋचा विषय को आगे विस्तार देते हुए वर्णन करती है –

न मृत्युरासीद मृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः।
अनादिवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चिनास।। ऋ 10.129.2

पदार्थ – उस अवस्था में (न) न तो (मृत्युः) मृत्यु (आसीत्) रहता है (न) और न (तर्हि) उस समय (अमृतम्) काल का नित्य व्यवहार ही रहता है (तथा रात्र्याः) रात्री का और (अह्न) दिन का (प्रकेतः) प्रकाशक चिन्ह अथवा व्यवहार (आसीत्) रहता है। (अवातः) कम्पन रहित (स्वधया) प्रकृति से युक्त (तत्) वह (एकम्) एक ब्रह्म (आनीत्) चेतना का व्यवहार करता है (तस्मात्) उससे (परः) परे (अन्यत् ह) दूसरा उसके समान, उससे बड़ा तथा उस जैसा (किञ्चन) कोई (न) नही (आस) रहता है।

भावार्थ – प्रलय काल में मृत्यु भी नहीं रहती है। जब उस काल में कोई प्राणी है ही नहीं तो मृत्यु किसकी होगी? उस समय काल व्यवहार भी संभव नही है। जब सूर्य, चन्द्र है ही नहीं तो दिन रात भी कैसे होंगे? उस समय तो कुछ स्थितिज ऊर्जा में समाया होता है। उस समय प्रकृति अपनी साम्यावस्था में होती है सब कुछ कम्पन रहित ही रहता है। उस समय एक चेतन सत्ता ईश्वर की रहती है, उससे बड़ा उसके समान अथवा उससे छोटे का भी कोई अस्तित्व नहीं होता है और वह भी उस समय क्रिया रहित होता है। विषय को विस्तार देते हुए अगली ऋचा कहती है –

तम आसीत्तमसा गुढहमग्रेऽप्रकेत सालस सवमा हदम्।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं
यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम्।। ऋ. 10.129.3

पदार्थ – (अग्रे) सृष्टि की उत्पत्ति के पूर्व की अवस्था में (तमसा) अन्धकार से (गूढम्) आच्छादित (तमः) प्रकृति (आसीत्) रहती है, (सर्वम्) सब कुछ (इदम्) यह (अप्रकेतम्) अप्रकट चिन्ह रहित (सलिलम्) सबको लीन किए हुए सलिल (प्रधान प्रकृति) (आः) व्यापक प्रकृति (तुच्छ्येन) कारण रूपता में (अपिहितम्) आच्छादित (आसीत्) रहती है। (तद्) उसको (तपसः) ताप के (महिना) प्रभाव से (एकम्) एक परमेश्वर (अजायत) कार्यरूप में उत्पन्न करता है।

भावार्थ – सृष्टि के उत्पन्न होने से पूर्व की अवस्था में अन्धकार से आच्छादित प्रकृति साम्यावस्था में लीन रहती है। प्रकृति तत्त्व कारण रूप में सत्व, रज और तम कणों की कारणावस्था में व्यापता रहता है। चूँकि प्रलयावस्था में सत्व, रज और तम साम्यावस्था में थे, स्थितिज ऊर्जा के रूप में थे और वे स्वयं अपने आप हलचल में नहीं आ सकते थे, उन्हें हलचल में लाने के लिए उन्हें ऊर्जा द्वारा धक्का देना आवश्यक था। उस कार्य के लिए भी एक बुद्धिमान चेतन रहित शरीर की आवश्यकता थी और वह चेतन शक्ति परमात्मा की थी उसने ताप देकर महान् विस्फोट कर दिया। इससे सत्व, रज और तम कणों में गति आ गई उनमें विकार उत्पन्न हो गया व आपस में टकराने लगे और एक–दूसरे को तोड़ते हुए नए नए कणों को जन्म देने लगे। प्रकृति साम्यावस्था में ताप देकर परमात्मा ने सृष्टि निर्माण प्रारम्भ कर दी। परन्तु विज्ञान विस्फोट का कोई तर्क सम्मत उत्तर नही देता है। स्थितिज ऊर्जा का गतिज ऊर्जा में बदलने लगना अपने आप हो जाना संभव नहीं है। फिर फ्रिटजाफ कापरा का कहना है कि यह विस्फोट भी इस ढंग से प्रारम्भ हुआ जिससे सृष्टि उत्पन्न होन की क्रिया प्रारम्भ हो गई। यदि विस्फोट के समय इलेक्ट्रोन पर विद्युत चार्ज कुछ अधिक होता तो विस्फोट इतना भयंकर होता कि सब कुछ अल्प समय में ही जलकर अनन्त में समा जाता और सृष्टि उत्पन्न नहीं होती। इसका अर्थ यह है कि किसी अत्यन्त बुद्धिमान चेतन शक्ति ने सोच समझकर ऐसा विस्फोट किया कि सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई। परन्तु वह शक्ति शरीरधारी नहीं थी।

अगली ऋचा में यह बताया गया है कि सृष्टि की उत्पत्ति कैसे हुई –

कामस्तदग्रे समवर्ततााधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।
सतो बन्धुमसति निरविन्दन्हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा।। ऋ. 10.129.4

पदार्थ – (अग्रे) प्रागवस्था में (कामः) सृष्टि रचना की इच्छा = ईक्षन (अधि सम् अर्वतत) सबके ऊपर विद्यमान होता है। (तत्) वह (यत्) जो कि (मनसः) मन का (प्रथमम्) प्रथम (रेतः) बीज (आसीत्) होता है (कवयः) क्रान्त दर्शन, विश्वसृज तत्व (हृदि) प्रकृति में केन्द्र में विद्यमान (मनीषा) परमेश्वर की ज्ञान शक्ति से (प्रतीष्य) प्रेरित होकर (सतः) व्यक्त जगत् के बन्धुम्) बाँधने वाले कार्य कारणात्मक व्यवहार को (असति)अव्यक्त प्रकृति में अथवा व्यक्तता के बंधन भूत कार्य जगत् को अव्यक्त प्रकृति में (निरविन्दन्) प्राप्त करते हैं।

भावार्थ– प्रागवस्था में सृष्टि उत्पत्ति रचना की इच्छा अथवा काम सब पर विद्यमान होता है और वह ही मन का प्रथम बीज होता है। क्रान्त दर्शन, विश्व सृज आदि कारण तत्त्व प्रकृति के केन्द्र में विद्यमान भगवान की मनीषा (ज्ञान शक्ति) से प्रेरित होकर व्यक्तता के बन्धन करने वाले कार्य जगत् अथवा कार्य कारण सम्बन्ध को अव्यक्त कारण प्रकृति में प्राप्त करते हैं। सांख्य दर्शन में बताया गया हैं कि प्रकृति में गति का विकार होते ही पहले महत अर्थात् सत्व, रज, तम कणों में ताप से आकार में वृद्धि होने लगती है। फिर अहंकार अर्थात् अपने होने की भावना उनमें आने लगती है। फिर सूक्ष्म पञ्च तन्मात्राओं का निर्माण होता है इसके बाद पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियों के साथ ही मन की उत्पत्ति हो जाती है। फिर स्थूल तन्मात्राओं की उत्पत्ति हो जाती है। अव्यक्त प्रकृति व्यक्त रूप प्राप्त कर लेती है

अगली ऋचा में इसी विषय को विस्तार दिया गया है।

तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी उदूपरि स्विदासी उत्।
रेतोधा आसनमहिमानआसन्स्वधा
अवस्तात्प्रयतिः परस्तात्।। ऋ. 10.129.5

पदार्थ– (एषाम्) इन कारण तत्त्वों की (रश्मिः) रश्मि (तिरश्चीनः) चारों तरफ हुई (विततः) फैली हुई हो जाती है (अधः स्वित्) नीचे को भी (आसीत्) होती है और (उपरि स्वित्) ऊपर को भी (आसीत्) होती है। उसमें दिखाई पड़ता है कि (रेतोधाः) अपने कर्म फलों के बीज को धारण करने वाले

शेष पृष्ठ 11 पर

अल्पज्ञ

● अभिमन्यु कुमार खुल्लर

काफी लम्बे समय से विचारतंत्री उलझी हुई है– कर्मफल की मीमांसा में। अनेक पृष्ठ रंग डाले हैं, अपने विचारों को अभिव्यक्ति देने में; पर कुछ बना नहीं और जब मस्तिष्क में कुछ स्रोत खुलता हुआ दिखाई देने लगा तो जीवात्मा की अल्पज्ञता की ओर मन केन्द्रित होने लगा। अतः पहले अल्पज्ञता पर ही विचार कर लें।

जीवात्मा अल्पज्ञ है, यह विद्वानों से वर्षों से सुनते आ रहे हैं। सुनना, समझना थोड़े ही होता है। फिर समझने के बाद हृदयंगम करना, आत्मसात् करना और बात है।

केवल परमात्मा सर्वज्ञ है तो उसके विपरीत चेतनप्राणी तो जीवात्मा ही है, फिर वह तो अल्पज्ञ ही हुआ। दो सर्वज्ञ नहीं हो सकते। जीवात्मा की हठधर्मी तो देखिए वह अपने को अल्पज्ञ मानने को तैयार नहीं।

हिन्दी के शब्दकोष में अल्पज्ञ की व्युत्पत्ति ''अल्प'' और ''ज्ञ'' दी है।'अल्प' माने थोड़ा 'ज्ञ' माने जानने वाला अल्पज्ञ माने थोड़ा जानने वाले या नासमझ। जीवात्मा अल्पज्ञ है, इसके प्रमाण में हजारों उदाहरण दिए जा सकते हैं। रात्रि में प्रगाढ़ निद्रावस्था में मुझे क्या मालूम कि सुबह देखूँगा भी या नहीं। संत कह गए हैं– नौ द्वारे का पींजरा, ता में पंछी मौन, रहे अचम्भा जानिए, गए अचम्भा कौन?

जीवात्मा की अल्पज्ञता का प्रश्न गहरा गया। दूधिए लालू जी को यदि 'अल्पज्ञता' का एहसास होता तो वह कभी 950 करोड़ के चारे घोटाले में नहीं फँसते। पन्द्रह वर्षो तक संपूर्ण ऐश्वर्य, राजसी ठाट भोगने के पश्चात् जेल। न एयरकण्डीशन कमरा, न सुखदायी गाव–गद्दे, कठोर जमीन और दो कम्बल। एक ओढ़ने को और एक बिछाने को। और जैसे–जैसे काली कमाई का पता चलता जाएगा, वैसे–वैसे शासन उस पर कब्जा करता जाएगा। डाकू बाल्मीकि को तो संत मिल गए थे। जिन्होंने उसके 'ज्ञ' को झकझोर दिया। संतों ने कहा–जा, घर जा। परिवार में पूछ ले कि जो चोरी डकैती का पाप कर्म करके उनके लिए धन अर्जित कर रहा है, उस पाप में वह भागी हैं, अथवा नहीं। सभी ने अस्वीकार कर दिया। कह दिया–हमारे भरण पोषण का दायित्व तुम्हारा है। इसे तुम पाप से करते हो या पुण्य से। इससे हमें कुछ लेना देना नहीं। कर्मफल तुम्हें ही भोगना होगा। बाल्मीकि की आँखें खुल गईं। संतों को उसने परिवार का कहा सुना दिया और उन्हें बंधन से मुक्त कर दिया।

लालू जी के साथ ऐसा नहीं हुआ। पूरा परिवार, पत्नी जिसे उन्होंने डमी मुख्यमंत्री तक बनवा दिया था, उनको सावधान, सचेत नहीं कर पाई। यह तो हुआ नहीं, बल्कि उस आनन्द में आकण्ठ डूबी रहीं। राँची की बिरसा मुण्डा जेल में लालू जी अकेले ही गए–सम्पूर्ण नाते–रिश्तेदारों से, पार्टी कार्यकर्ताओं से वियुक्त होकर। क्या इसकी कल्पना उन्होंने चारा घोटाला में लिप्त होने पर की थी? क्या यह जीवात्मा की अल्पज्ञता का प्रमाण नहीं है?

और लीजिए–एक ही दिन में जीवात्मा की अल्पज्ञता के दो प्रमाण मिल गए। 'संत' आसाराम 'बापू' स्वघोषित कृष्णावतार, 2000 युवतियों से रति–सुख उठाने के पश्चात्, नहीं, नहीं उन्हें मोक्ष सुख दिलाने के पश्चात् नपुंसक, त्रिनाड़ी शूल और पीडोफीलिया से ग्रसित बताए जाने के बाद भी अभी तक जमानत भी नहीं पा सके। यहाँ नंपुसक, त्रिनाड़ी शूल और पीडोफीलिया' की थोड़ी चर्चा की जा रही है। बापू नपुंसक हैं, 16 वर्षीय नाबालिग लड़की से बलात्कार नहीं कर सकते, डॉक्टरी जाँच में यह दावा झूठा सिद्ध हुआ। त्रिनाड़ी शूल उपचार नारी वैद्य ही कर सकती है और वह भी परित्यक्ता उनकी शिष्या बताई गई। आयुर्वेद में त्रिनाड़ी शूल कोई बीमारी नहीं है। पीडोफीलिया से ग्रसित व्यक्ति किशोर बालकों से कामवासना तृप्ति चाहता है, करता है। यानी 'बापू' आसाराम को लगभग प्रतिदिन सैक्स की तृप्ति चाहे हूरें हों या गिलमान चाहिए–चाहे उसके लिए अफीम, स्वर्णभस्म और हीरा भस्म का सेवन ही क्यों न करना पड़े। नंपुसक, त्रिनाड़ी शूल और पीडोफीलिया से ग्रसित बताए जाने के बाद भी अभी तक जमानत भी नहीं पा सके। कारागार की सख्त जमीन पर वह भी दो कम्बलों में पड़े हैं। वैभव की पराकाष्ठा देखिए। पूरे विश्व में 450 आश्रम! लाखों भक्त! लाखों भक्तों की भक्ति देखिए कि वह पूर्णतया आश्वस्त हैं कि ''बापू'' निर्दोष हैं और उन्हें षडयंत्रपूर्वक फँसाया गया है और प्रताड़ित किया जा रहा है। उनकी मुक्ति के लिए जप–जाप चल रहे हैं। प्रदर्शन हुए हैं, जेल के बाहर भी और अन्यत्र भी। व्यक्तिगत अल्पज्ञता और सामूहिक अल्पज्ञता का बेजोड़ उदाहरण मिल गया।

अब आइए, सम्भोग से समाधि तक ले जाने वाले 'भगवान' रजनीश अपना झण्डा गाड़ने अमेरिका–यू.एस.ए. गए थे। उन्हें क्या मालूम था कि अमरीका पहले ही सम्भोग से समाधि या चिर समाधि की ओर अग्रसर है। जेल जाना पड़ा। भक्तों ने प्रधानमंत्री राजीव जी से अनुरोध किया तब ही मुक्त हो आकर भारत लौटे फिर पतन गाथा शुरू हुई। यह भी अल्पज्ञ सिद्ध हुए।

प्रखर बुद्धि के धनी मध्यप्रदेश शासन में सर्वोच्च पदों पर आसीन पति–पत्नी युगल अरविन्द जोशी एवं टीनू जोशी, जो दोनों ही आई.ए.एस. हैं, 42 करोड़ की आय से अधिकसंपत्ति के मामले में फंसे पड़े हैं, धन–वैभव व शासकीय पद की गरिमा से मण्डित अब समस्त प्रतिष्ठा गवा कर धूल–धूसरित हो रहे हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों में से दो, लालू जी और जोशी दम्पती में आत्मा के बताए गए छः महाबली शत्रुओं में से केवल लोभ के शिकार हुए और बाकी दो 'सन्त' आसाराम और 'भगवान' रजनीश काम और लोभ के। इस सूची में मेरी जानकारी के अनुसार उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश और हरियाणा के पुलिस महानिरीक्षक महोदय भी आते हैं। थोड़े से प्रयत्न से और जानकारी भी जुटाई जा सकती है।

ये सब उदाहरण भारत के हैं जिन्हें जीवात्मा की अल्पज्ञता का ज्ञान हजारों वर्ष की सांस्कृतिक विरासत में मिला है। जरा, देखिए तो सहीः–

1. 'सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं'।

2. 'सब ठाठ धरा रह जाएगा, जब हंसा जाएगा उड़।'

3. मुन्ज के भेजे गए हत्यारों ने मासूम भोज की हत्या नहीं की उसे बता दिया कि चाचा मुन्ज ने राज्य के लोभ से उसकी हत्या करने के लिए जंगल में भेजा है। भोज ने कहा कि चाचा को मेरी मृत्यु का समाचार देने से पहले मेरा संदेश दे देना। भोज ने एक श्लोक लिख भेजा जिसका हिन्दी अनुवाद है–सतयुग का प्रतापी राजा मान्धाता मर गया। समुद्र पर सेतु बाँधने और रावण को मारने वाला राम भी आज कहाँ है? युधिष्ठर आदि राजा भी स्वर्ग को चले गये। किसी के साथ यह राज्य, यह भूमि नहीं गई। निश्चय ही यह तेरे साथ अवश्य जाएगी। इस श्लोक को पढ़कर मुन्ज के ज्ञान चक्षु खुल गए।

4. ईशोपनिषेद के प्रथम मंत्र में ही कहा गया है कि संसार का समस्त वैभव तेरे लिए है, इसका जमकर भोग कर पर यह सोचकर कि सब उस परमात्मा का है– तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा। तेरे साथ कुछ नहीं जाएगा।

5. युधिष्ठिर और यक्ष में संवाद का एक प्रश्न– संसार की सबसे विचित्र बात क्या है? और युधिष्ठर का उत्तर–संसार की सबसे विचित्र बात यह है कि मनुष्य मृत्यु को रोज देखता है और सोचता है कि यह मरेगा, वह मरेगा पर मैं नहीं। जीवात्मा अल्पज्ञ ही सिद्ध हुआ न।

मनुष्य की बुद्धि को, विवेक को सदैव जागृत रखने का एक ही उपाय है–परमात्मा की शरण और माँगना गायत्री मंत्र के अनुकूल–हे परमात्मा! हमारी बुद्धि को कल्याणकारी मार्ग पर ले चल क्योंकि हमारे काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर में फँसने के पूरे पूरे चांसेज हैं। हम फँसेंगे ही क्योंकि जीवात्मा बना ही इन गुणों से है। प्रयत्न और वैराग्य की राह पर चलने वाला बिरला ही पुण्यात्मा होता है।

मैं अपनी भड़ास निकाल रहा हूँ। मैं स्वयं जीवन भर इनसे मुक्त नहीं हो सका। कितना कीचड़ लपेटा है, इसे मैं या मेरा परमात्मा जानता है, पत्नी भी नहीं। सूरदास के शब्दों में कहना चाहूँगा–अब लौं नसानी, अब ना नसैहों।

22 नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर

☞ *पृष्ठ 5 का शेष*

अमर बलिदानी ...

प्रतिभा के धनी स्वामी दर्शनानन्द थे। अपना जीवन अर्पित करने वाले महात्मा हंसराज जी थे। धर्म पर बलिदान होने वाले पण्डित लेखराम, महाशय राजपाल जैसे अनेक वीर थे। वेदानन्द तीर्थ, चमूपति जैसे चिन्तक थे, पण्डित लेखराम, महाशय राजपाल जैसे अनेक वीर थे। वेदानन्द तीर्थ, चमूपति जैसे चिन्तक थे, पण्डित रामचन्द्र देहलवी और ठाकुर अमरसिंह जैसे मेधा के धनी शास्त्रार्थ महारथी थे। स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अपना सर्वस्व स्वाहा करने वाले त्यागी थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना शरीर तो मानव–कल्याण एवं देश–हित में बलिदान किया ही मगर उससे पूर्व उन्होनें अपनी समस्त धन–सम्पदा अपने मिशन के लिए समर्पित कर दी थी। स्वामी जी महाराज एक ऐसे अद्भुत एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे कि उनके स्मरण मात्र से ही हमारे भीतर ओजस्विता, कर्मठता और बलिदानी भावनाओं का संचार होने लगता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने तप और त्याग द्वारा संसार में ऐसे अद्भुत कार्य किए जिनके कारण उन्हें सदा–सर्वदा स्मरण किया जाता रहेगा उनके बलिदान दिवस के अवसर पर हमें प्रेरणा लेनी चाहिए कि हम भी अपने तप, त्याग और कर्मठता के साथ वैदिक धर्म की सेवा करने के लिए निःस्वार्थ भाव से आगे बढ़कर पुनः आर्यसमाज का स्वर्णयुग लौटाने की दिशा में आत्मना समर्पित होकर अपने जीवन को सार्थकता प्रदान करें।

महादेव, सुन्दरनगर– 174401, हि०प्र०

www.thearyasamaj.org

देश के चार महान् राजनीतिज्ञ

● खुशहाल चन्द्र आर्य

जब हम अपने प्यारे देश भारत के अतीत का उज्ज्वल इतिहास का अवलोकन करते हैं तो हमें चार महान् राजनीतिज्ञों का दिग्दर्शन होता है जो भारत के नभ-मण्डल में अपनी तेजस्विता के कारण देदीप्यमान है। उनके नाम हैं (1) भगवान श्रीकृष्ण (2) आचार्य चाणक्य (3) महाराजा शेर शिवाजी (4) लौह पुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल। इन चारों का यहाँ पर संक्षिप्त परिचय देने जा रहे हैं, जो इस भाँति है।

(1) **भगवान श्रीकृष्ण**:- ये महान् योद्धा, बलवान, कुशाग्र, बुद्धिमान, साहसी व परम् धैर्यवान तो थे ही साथ ही एक महान् राजनीतिज्ञ भी थे। महाभारत में कौरवों की तरफ महान् योद्धा दादा भीष्म, (महारथी) गुरु द्रोणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे महारथी होने के बाद तथा साथ ही एक विशाल ग्यारह अक्षौहिणी सेना के होने पर भगवान श्रीकृष्ण की कुशल राजनीति ही थी जिसके कारण पाण्डवों का कमजोर पक्ष होते हुए भी उनको विजय दिलवाई। इस विजय का पूरा श्रेय भगवान श्रीकृष्ण को जाता है। महाभारत में एक नहीं अनेक स्थल ऐसे आते हैं, यदि उस समय श्री कृष्ण अपनी बुद्धिमत्ता न दिखाते तो पाण्डवों का विजयी होना असंभव ही थी। कर्ण, अर्जुन से हर बात से अधिक बलशाली था। उसका रथ कीचड़ में फंस जाने पर कर्ण को मारने का संकेत देना, अर्जुन द्वारा जयद्रथ को सूर्य छिपने से पहले मारने की प्रतिज्ञा को सफल बनाना, दादा भीष्म व गुरु द्रोणाचार्य को मारने की युक्ति बताना, दुर्याधन की जाँघ पर भीम द्वारा प्रहार करवाना आदि सामयिक कार्य करवाना श्री कृष्ण की ही बुद्धिमत्ता थी जिससे कारण पाण्डवों को विजय प्राप्त हुई। श्रीकृष्ण एक अद्वितीय महापुरुष थे, उनमें आपत्तियों से निकलने की अद्भुत क्षमता थी जिसके कारण वे हारी बाजी को जीत लेते थे। वे वेदों के भी प्रकाण्ड विद्वान् थे, तभी तो वे गीता ज्ञान देकर अर्जुन का मोह भंग करवाकर युद्ध के लिए तैयार कर सके। भगवान श्री कृष्ण का धर्म, अन्य धर्माधिकारियों की तरह "अंहिसा परमोधर्मः" वाला धर्म नहीं थी। उनका धर्म, पापियों दुष्टों को छल, बल आदि किसी भी प्रकार से मार देना ही था। उनका कहना था कि जो पापी का साथ देता है, वह भी पापी है, उनको मारना भी धर्म है इसलिए दुर्योधन पापी का साथ देने वाले दादा भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य, गुरु कृपाचार्य व कर्ण जैसे लोगों को पापी समझ कर ही मरवाया। श्री कृष्ण की राजनीति केवल सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है।

(2) **आचार्य चाणक्य**:- भारत के इतिहास में राजनीति में दूसरा स्थान आता है आचार्य चाणक्य का। ये भी एक विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। इस अवध के अन्यायी राजा महानन्द ने अपने मन्त्री चाणक्य का अपमान करके उसको अपने महल से निकाल दिया। तब महा पण्डित चाणक्य ने प्रतिज्ञा की थी कि मैं महानन्द के इतने बड़े साम्राज्य को नष्ट करके ही दम लूँगा और उसने वैसा ही कर दिखाया। चाणक्य एक बड़े दूरदर्शी व्यक्ति थे। जब उसने देखा कि राजमहल के बाहर ही महाराजा की दईया मूरी का एक होनहार लड़का जिसका नाम चन्द्रगुप्त था, अपने साथियों के साथ खेल रहा था और वह राजा का पार्ट लेकर खेल रहा था। चाणक्य की दूरदर्शिनी बुद्धि ने जान लिया कि यह बालक विलक्षण बुद्धि का है, यदि इसको शस्त्र विद्या सिखा दी जाए तो इसके द्वारा मैं महानन्द को परास्त कर सकता हूँ और ऐसा ही करके चन्द्रगुप्त द्वारा महानन्द को परास्त किया और उसके साम्राज्य का विनाश करके चन्द्रगुप्त को सम्राट बना दिया और स्वयं अवध राज्य का महामन्त्री बनकर जंगल में एक कुटिया में एक तपस्वी जीवन बनाकर रहने लगा। राज्य की व्यवस्था इतनी बढ़िया व सुदृढ़ थी कोई भी राजा चन्द्रगुप्त के राज्य की तरफ आँख उठाकर देखने का दुस्साहस नहीं कर सकता। चाणक्य ने एक 'चाणक्य-नीति' पुस्तक भी लिखी जिसको पढ़कर लोग आश्चर्य चकित हो जाते हैं। चाणक्य जैसा बुद्धिमान, राजनीतिज्ञ, चरित्रवान व राष्टहित के प्रति समर्पित भाव वाले व्यक्ति भारत के इतिहास में ढूँढ़ने से भी बहुत कम मिलते हैं। उसके महामन्त्री काल में जनता पूर्ण सुखी व आनन्दित थी। कहा जाता है कि जिस राज्य का मन्त्री जंगल में कुटिया बना कर रहेगा, तो उसकी जनता महलों में आनन्द की नींद सोएगी और जिस राज्य का मन्त्री महलों में ऐश करेगा, उसकी जनता झोंपडियों में रहकर दुःखी जीवन व्यतीत करेगी। इस बात को चाणक्य ने चरितार्थ करके दिखा दिया। आज के शासक महामन्त्री महलों में व फाइव स्टार होटलों में रहते हैं, तभी आज की जनता दुःखी है। जनता को आतंकवादियों का भय और महँगाई की मार सहनी पढ़ रही है। आज के मंत्रियों को चाणक्य के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए।

(3) **शेर शिवाजी**:- भारत के इतिहास में राजनीति के क्षेत्र में शेर शिवाजी महाराज का भी एक विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे भी एक अद्वितीय साहसी और विलक्षण बुद्धि के राजनीतिज्ञ थे। इसलिए वे एक साधारण छोटे से राज्य के राजा होकर, औरंगजेब जैसे अन्यायी, बड़े राज्य से टक्कर लेने में सफल हो गए। उनकी माता जीजाबाई एक धार्मिक और राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत विदुषी महिला थी जिसने अपने पुत्र शिवा को बचपन से ही अच्छी अच्छी धार्मिक, वीरता की कहानियाँ सुना-सुनाकर उसे एक देश भक्त राजा बना दिया। शिवाजी ने अपनी गतिविधियों से औरगंजेब की नींद हराम कर रखी थी। औरगंजेब उन्हें पकड़ने की जितनी भी चालें चलता था, शिवाजी उन्हें निष्फल कर देते थे और उसकी पकड़ में नहीं आते थे एक बार औरगंजेब ने अफजल खाँ को शिवाजी से सन्धि करने भेजा, यह भी उसकी चालाकी थी जिसे शिवाजी ने नाकाम कर दिया था और अफजल खाँ के चंगुल से निकल गए। एक बार शिवाजी औरंगजेब की पकड़ में आ गए और उन्हें जेल में डाल दिया, पर शिवाजी जेल से ऐसी चतुरता से निकल गए कि औरंगजेब को पता भी नहीं लगा। शिवाजी ने अपने छोटे से राज्य को हिन्दू राज्य घोषित करके इतना सुन्दर ढंग से राज्य चलाया कि भारत के इतिहास में एक उदाहरण बन गया।

(4) **लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल**:- सरदार पटेल आधुनिक समय के श्रीकृष्ण कहलाते हैं। जिस प्रकार श्री कृष्ण ने खण्डित भारत को संगठित करके महाभारत बनाया, उसी प्रकार सरदार पटेल ने 562 रिसायतों को मिलाकर एक विशाल भारत बनाया। सरदार पटेल की विलक्षण बुद्धि, दृढ़ निश्चय, अपरिमित साहस, संगठन शक्ति को देखकर ही जनता ने उन्हें लौह पुरुष की उपाधि से विभूषित किया। सरदार पटेल एक ऐसे दृढ़ विश्वासी व्यक्ति थे कि जो काम करने ठान ली, उसे पूरा करके ही रहे।

अंग्रेजों ने हमें 15 अगस्त 1947 को आजादी तो जरूर दी परन्तु वह अधूरी आजादी थी। उस अधूरी आजादी को पूर्ण आज़ादी में परिवर्तन करने का श्रेय सरदार पटेल को ही जाता है। अँग्रेज जब भारत छोड़कर गए थे, तब भारत में 562 देशी रियासते व रजवाड़े थे। वे सभी को स्वतंत्र छोड़कर गए थे। सभी रियासते चाहे तो भारत में मिलें या चाहे पाकिस्तान में मिलें या स्वतंत्र रहें। सब छूट देकर गए थे। वे तो यही उम्मीद रख कर गए थे कि 562 रियासतों व रजवाड़ों को भारत कभी भी नहीं मिला सकेगा और परस्पर लड़ाई-झगड़ा चलता रहेगा जिससे देश में अशान्ति बनी रहेगी। अन्त में हम ही आकर राज्य सम्भालेंगे, पर सरदार पटेल ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। पटेल जी ने इतना होशियारी व चातुर्य वे सब राजाओं को समझाकर, डराकर या किसी से युद्ध करके सबको भारत में मिला लिया। जूनागढ़ व ग्वालियर महाराजा ने कुछ आनाकानी की थी, परन्तु उनको भी समझा बुझाकर मना लिया। केवल हैदराबाद का बादशाह नहीं मिलना चाहता था। उसको भी सेना भेजकर चार घंटों में भारत में मिला लिया। अब केवल कश्मीर की एक समस्या आ गई। जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर चढ़ाई कर दी, तब वहाँ के राजा हरिसिंह ने दिल्ली आकर पटेल जी से सन्धि कर ली, तब पटेल जी ने कश्मीर पर चढ़ाई कर दी और दो तिहाई हिस्सा कश्मीर का भी जीत लिया, तभी नेहरू जी ने बीच में टाँग लगाकर सेना को आगे बढ़ने से रोक दिया और कश्मीर की समस्या को जहाँ की तहाँ रखकर केस को U.N.O (राष्ट्र संघ) में दे दिया, यदि ऐसा न होता तो काश्मीर की समस्या भी हल हो गई होती और आज भारत विश्व के मजबूत और सुदृढ़ देशों में गिना जाता। आज हमें पाकिस्तान जैसा छोटा देश भी आँख दिखा रहा है। यदि काश्मीर समस्या हल हो जाती तो चीन और अमेरिका भी हमें आँख नहीं दिखा सकते थे और भारत एक सुदृढ़ देश के रूप में खड़ा हुआ दीखता और हम सभी भारतवासी सुख और आनन्द की नींद सोते।

180 महात्मा गान्धी रोड (दो तल्ला)
कोलकाता-700007
मो. 9830135794

www.thearyasamaj.org

चतुर्दिक् नाथ तुम छाए हुए हो

● जसवन्त राय गुगलानी

ईशावास्यमिदम् सर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन व्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

यजुर्वेद के 40वें अध्याय में प्रथम मंत्र के पूर्वाद्ध में संदेश दिया गया है कि इस चलायमान जगत् के कण–कण में वह ईवर समाया हुआ है।

तू हर ज़र्रे में पिन्हा है, जहां तुझ में समाया है। मुक्कयद इक जगह या रब तू हरगिज़ हो नहीं सकता

उपरोक्त मंत्र में दो सत्ताओं का वर्णन है। एक ईश्वर और दूसरा जगत्। इन में से जगत् वह है जो कुछ दिखाई देता है अथवा दिखाई नहीं देता वह सब अतिशील है। विज्ञान वेत्ताओं ने भी सिद्ध किया है कि सब से सूक्ष्म परमाणु (atom electrons) बड़े वेग से दौड़ रहे होते हैं। जगत गतिशील है और ईश्वर गति देने वाला। जगत जड़ है और ईश्वर चेतन। जड़ पदार्थ स्वयमेव गति नहीं कर सकता। इसे गति देते के लिए किसी चेतन शक्ति की आवश्यकता रहती है। ईश्वर नित्य है, कभी समाप्त नहीं होता। वह सदा से है और सदा रहेगा। वह सर्वव्यापक है, निराकार है, अजन्मा है, अनन्त है, निर्विकार है। यजुर्वेद के 40वें अध्याय के 8वें मंत्र में ईश्वर के लक्षण इस प्रकार वर्णित किए हैं।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमवर्णमस्नाविरं शुद्धमपाप विद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाम्यः।।

वह ईश्वर व्यापक, शुद्ध, शरीर रहित, नस नाड़ी रहित, घाव रहित पाप के प्रभाव से दूर, कवि, बुद्धिमान, अपनी सत्ता में सब ओर स्थित, नित्य जीवों के लिए जैसे चाहिए वैसे पदार्थों का निमार्ण करता है।

ईश्वर के 3 महान गुण होने आवश्यक हैं– 1 सृष्टि की रचना करना 2 पालन करना तथा 3 सृष्टि का संहार करना।

जिस किसी में ये गुण नहीं वह जगत नियन्ता ईश्वर नहीं हो सकता।

अवतार वाद– जो अवतार बाद में विश्वास रखते हैं, वे कृपया ध्यान दें कि श्री राम, श्री कृष्ण, विष्णु, शिव आदि ऐतिहासिक महापुरूष तो हो सकते हैं पर ईश्वर नहीं। क्योंकि उन में उपरोक्त लक्षण व गुण विद्यमान नहीं हैं। जिसका कोई आकार ही नहीं तथा वेद ने अजन्मा कहा उसका अवतार कैसा।

जहाँ तक जगत का प्रश्न है, वह प्रतिक्षण परिवर्तनशील है। यदि जीव का उदाहरण लें तो हम देखते हैं कि मनुष्य के शरीर में प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। शिशु से बालक, किशोर, युवक, प्रौढ़ तथा वृद्ध होता है और पता भी नहीं चलता ईश्वर सदा एक सा रहता है। उस में कोई परिवर्तन नहीं होता। ईश्वर का एक गुण और भी है वह यह है कि वह रुद्र कहताला है। क्योंकि वह जीवों के कर्म अनुसार न्याय पूर्व फल भी देता है। यदि मनुष्य ईश्वर को सर्वव्यापक और रुद्र अर्थात पाप का दण्ड देने वाला समझा ले तो संसार में कोई भी पाप ही न करे। संसार में अधिकांश पाप छुप कर किए जाते हैं। व्यक्ति यह समझता है कि उसे कोई नहीं देख रहा।

एक बार गोस्वामी तुलसीदास जी रात के समय चले जा रहे थे। मार्ग में उन्हें कुछ चोर मिले। उन्होंने तुलसीदास से पूछा तुम कौन हो? तुलसीदास जी का संक्षिप्त उत्तर था। 'जो तुम हो वही मैं हूँ।'' उन का आशय था मैं भी मनुष्य हूँ तुम भी मनुष्य हो। चोरों ने समझा हम चोर हैं यह भी चोर ही है। उन्होंने गोस्वामी जी को अपने साथ ले लिया। वे एक घर में चोरी करने के लिए घुसे। तुलसीदास को बाहर ठहरा दिया उन से कहा ''देखते रहना कोई हमें देख लें तो मिट्‌टी के ढेले को उठाकर घर के अन्दर फैंक देना, हम वहीं से भाग लेंगे'' अभी चोर घर में उद्देश्य पूर्ति के लिए घुसे ही थे कि तुलसीदास जी ने मिट्‌टी का ढेला अन्दर फैंक दिया। चोर वहाँ से भाग लिए। उनके साथ तुलसीदास भी हो लिए। नगर के बाहर एक बरगद के पेड़ के नीचे एकत्रित हुए। चोरों ने तुलसीदास जी से पूछा– 'कौन आ गया था जो तुम ने मिट्‌टी को ढेला घर के अन्दर फैंका। तुलसीदास ने कहा 'बन्धुओं ईश्वर तो सर्वत्र विद्यमान है। वह हमारे प्रत्येक कर्म का साक्षी है। ईश्वर सब कृत्यों का न्यायोचित फल देता है' उन्होंने लिखा है – **'हरि व्यापक सर्वत्र समाना, प्रेम से प्रगट हो हिं मैं जाना'** कबीर जी ने भी लिखा– **खालिक खलक में खालिक, घटि घटि रह्यो समाई।**

मूर्ति पूजा– कैसी बिडम्बना की बात है, जो संसार का रचयिता है तथा जो सब का प्राणाधार है, उस की हम मूर्ति बना कर उसको जन्मदाता बनाते हैं तथा उस में प्राण प्रतिष्ठा करते हैं। पुत्र पिता को पैदा होने की सूचना देता है।

पाठक वृन्द, आप ने सम्भवतः अकबर व बीरवल की लघु कथाएँ सुनी होंगी। ईश्वर के संबंध में एक कथा प्रस्तुत है।

बीरबल जहाँ बुद्धिमान था वहाँ दृढ़ ईश्वर विश्वासी भी था। जब–जब अकबर के सम्मुख कोई समस्या उत्पन्न होती तो वे बीरबल से परामर्श करते थे। किसी विकट समस्या के समाधान के लिए उपस्थित होने पर बीरवल, बादशाह से कहते 'भगवान पर भरोसा रखो वह बड़ा कारसाज है। सब मुश्किलें उसकी कृपा से आसान हो जाती हैं। एक दिन बादशाह ने बीरबल से कहा '' तुम रोज़ ईश्वर को याद करने को कहते हो। क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हारा वह भगवान कहाँ रहता है? वह मिलता कैसे है? वह करता क्या है? मुझे इन प्रश्नों का उत्तर यदि सात दिनों तक न मिला तो तुम्हें दण्डित किया जा सकता है'' प्रश्न जटिल थे। बीरबल को उत्तर नहीं सूझ रहा था। बीरबल एक दिन सायं के समय यमुना नदी के तीर पर चिन्तित मुद्र में टहल रहे थे। उधर से 16 वर्ष का चरवाहा गुजरा। बीरबल को चिन्तित देख कर चिन्ता का कारण पूछा। पहले तो बीरबल ने बताने में आनाकानी की। उस के बहुत आग्रह करने पर बीरबल ने समस्या उसके सम्मुख रख दी। उस बालक ने बीरबल को विश्वास दिलाया कि यदि वे उसे दरबार में ले जाएँ तो वह बादशाह को प्रश्नों का उत्तर देकर संतुष्ट कर सकता हूँ। अन्ततः बीरबल उस बालक को दरबार में प्रस्तुत कर बादशाह से बोला, ''यह बालक आप के सभी प्रश्नों का उत्तर देगा''। पहले तो बादशाह कहने लगा कि यह अल्पवयस्क बालक क्या उत्तर दे पाएगा परन्तु फिर उसने सोचा,

''उत्तम विद्या लीजै जदपि नीच पे होय।
पड़ो अपावन ठौर पे कन्चन तजे न कोय।।

बादशाह ने अपने प्रश्न दोहराए। बालक बोला, ''प्रश्न पूछने से पहले, आप इतना भली भाँति जानते हैं कि अतिथि साकार होना चाहिए। अतिथि को जलपान कराया जाना चाहिए।'' बादशाह ने पूछा, ''आप क्या लेना चाहोगे?'' बालक ने दूध पीने की इच्छा प्रकट की। तुरन्त ही दूध मँगवाया गया। बालक को दूध का कटोरा प्रस्तुत किया गया। बालक कटोरे में उँगली घुमा–घुमा कर झाँकने लगा। बादशाह ने पूछा, ''यह तुम क्या कर रहे हो?'' बालक ने उत्तर दिया, '' कहते है कि दूध में मक्खन होता है। मैं इस में मक्खन ढूँढ रहा हूँ।'' बादशाह क्रोधित हो कर बोला, ''मूर्ख बालक ! तुम इतना भी नहीं जानते कि मक्खन तो सारे दूध में है, परन्तु उसे प्राप्त करने के लिए पहले दूध को गर्म किया जाता है। फिर उसको जामन लगाकर दही जमाया जाता है। फिर उस को मथनी से मथा जाता है। तब जाकर मक्खन की प्राप्ति होती है।'' बालक बोला हुजूर आप के पहले दो प्रश्नो का उत्तर तो इसी में मौजूद है। भगवान भी मक्खन की भाँति सारे विश्व में कण–कण में मौजूद है। उसे प्राप्त करने के लिए पहले मन में धारण कर ध्यान रूपी दही जमाई जाती है फिर समाधि रूप मथनी से मथा जाता है। फिर ईश्वर के दर्शन होते हैं। अब बादशाह ने अपना तीसरा प्रश्न दोहराया, ईश्वर करता क्या है? बालक ने बादशाह से पूछा, ''हुजूर यह प्रश्न आप गुरु बनकर पूछ रहे हैं या शिष्य बनकर?'' बादशाह ने उत्तर दिया जिज्ञासा रखने के लिए शिष्य होना जरूरी है। अस्तु मैं शिष्य बनकर ही अपना प्रश्न पूछ रहा हूँ।'' बालक बोला, 'हुजूर जान बख्शी हो तो इस उपलक्ष में कुछ कहूँ?'' बादशाह की अनुमति के उपरान्त बालक बोला, 'कितनी विडम्बना की बात है कि शिष्य सिंहासन आरूढ़ है और गुरु नीचे खड़ा है?'' बादशाह तुरन्त सिंहासन उतर आया तथा बालक को सिंहासन पर बैठा दिया। बालक ने बादशाह से कहा, ''अब तो आप समझ गए होंगे कि ईश्वर करते क्या हैं?'' बादशाह बोला, मैं समझा नहीं''। बालक ने कहा कि भगवान क्षण में रंक को राजा और राजा को रंक बना देता है।

ईश्वर इन धर्म चक्षुओं का विषय नहीं है। ये आँखे तो स्थूल वस्तु को जो न अधिक निकट हो और न ही अधिक दूर हो, उसे ही देख सकती है। आँखों को बहुत निकट ले जाकर कुछ भी पढ़ा नहीं जा सकता। आँखो से एक सीमा से अधिक दूर की वस्तु को भी नहीं देखा जा सकता। अस्तु भगवान तो सम्पूर्ण शरीर में समाया हुआ है। अधिक निकट होने के कारण इन आँखो से नहीं देखा जा सकता। ईश्वर मन की आँखो द्वारा ही ग्राह्य है। उसे इधर–उधर या वन में खोजने की आवश्यकता नही हैं। गुरु नानक देव जी ने कुछ यों फरमाया है –

काहे रे वन खोजन जाहि
सदा अलेपा, सर्व निवासी तोही संग समाई
पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है, मुकुर मध्य ज्यों छाई
तैसे ही हरि बसें निरन्तर, घट ही खोजो भाई

एक प्रश्न किया जाता है कि जब ईश्वर सर्वत्र व्यापक है तो मूर्ति में भी व्याप्त है फिर आर्य समाज मूर्ति पूजा का विरोध क्यों करता है। बन्धुओ ! जब कभी दो व्यक्तियों का साक्षात्कार होना है तो उन का आमने–सामने होना आवश्यक है। यह ता सत्य है कि मूर्ति में भगवान मौजूद है। चर्म चक्षुओं से देखा नहीं जा सकता तथा आत्मा मूर्ति में जा नहीं सकती तो निश्चित रूप से भगवान के दर्शन जीवात्मा को हृदय में हो सकते हैं। जहाँ दोनों अर्थात् आत्मा और परमात्मा मौजूद हैं।

ओ३म् शम्

91, सैक्टर–4, गुड़गाँव
मो. : 9999667647

www.thearyasamaj.org

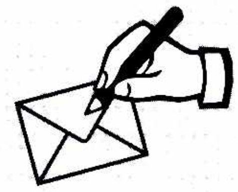

पत्र/कविता

कारवाँ निकल के आगे बढ़ गया

मान्यता धरी की धरी रह गई, कारवाँ निकल के आगे बढ़ गया।
सीढ़ियाँ समझते रहे हम जिन्हें, तर्क के मुवाहसे में ढह गया।।

स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ! क्यों कहें–स्त्री शूद्रो नाधीयताम्।
गार्गी मदालसा इतिहास बनी, प्रज्ञा मेघा सी तमाम।।

जग रही आधी आबादी मेढ़ पाबन्दियों का बह गया।
शुभ कार्य में छुप कर रहें विधवाओं की थी त्रासदी।।

इन्दिरा जी ने मिथक तोड़ा उद्घाटन कर मिल गई सब को आजादी।
आज पुनर्विवाह का प्रचलन सम्मानित करें फिर कह गया।।

रूढ़ियों कुरीतियों को हम विवश खुद छोड़ते हैं।
शिक्षा का प्रचलन बढ़ा–समझते हैं, मुख मोड़ते हैं।।

श्राद्ध–तर्पण, मूर्त्ति पूजा अशिक्षितों में रह गया।
जाति पाँति शूद्र हरिजन अब ना कोई मानता है।।

वेष भूषा, रहन सहन एक जैसा, कैसे कोई पहचानता है।
घृणा और अलगाव का दुःख सम्पर्क से उपह गया।।

उच्च शिक्षा के लिये जल थल–हवा को लाँघते।
करके परिश्रम हर कोई निज सद्गुणों को निखारते।।

प्रशासन और सरकार ने सहयोग का सामर्थ्य दिया।
ऋषि की तपस्या फल रही क्रान्ति हुई–भ्रान्ति मिटी।।

जागृति के शंखनाद से फुर्र है मान्यता घिसी पिटी।
आर्यों की हर ईकाई ने सफल हर तरह से किया।।

सत्य देव प्रसाद आर्य 'मरुत'
आर्य समाज नेमदार गंज
(नवादा–बिहार) 805121

धर्म अनेक, पूर्वज एक

इण्डोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो ने नेहरु जी को राष्ट्रीय अतिथि के रूप में आमंत्रित किया था नेहरु जी के सम्मान में सुकर्णो ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा। इस कार्यक्रम रामलीला का बड़ा प्रभावशाली मंचन हुआ था। श्री नेहरु जी बड़ी प्रसन्नता से डा. सुकर्णो से पूछा "राष्ट्रपति जी इण्डोनेशिया तो एक इस्लामिक राष्ट्र है, किन्तु आपने रामलीला का मंचन कैसे कराया, यह तो हिन्दुओं का इतिहास है।" राष्ट्रपति सुकर्णो ने नेहरु जी को उत्तर दिया – 'प्रधानमंत्री जी हमारे बुजर्गों ने न जाने किन परिस्थितियों में किन विपदाओं में कैसे मजहब बदल लिया किन्तु हमने अपने पूर्वज और अपना इतिहास नही बदला हैं, हमें इस से लगाव है हम इसे प्यार करते हैं। रामायण का हमारे देश में बहुत बड़ा सम्मान है। सभी अल्पसंख्यकों को डा. सुकर्णो की यह बात विचारने योग्य है। इसी प्रकार एक बार सीमान्त प्रदेश के सीमान्त गांधी के छोटे भाई बादशाह खान का अभिनन्दन हुआ था। अपने अभिनन्दन के उत्तर में उन्होंने कहा था – "आप मुझे विदेशी क्यूँ मान रहे हैं? मैं तो आपके आचार्य पाणिनि के राजस्थान 'शालातूर' के पास का हूँ। मैं तो अपने को प्रथम आर्य मानता हूँ फिर पठान हूँ, फिर मुसलमान हूँ"। यह वास्तविक सच्चाई है कि मजहब तो विचारों के कारण, लोभ, लालच के कारण, भय के कारण, छल प्रपञ्च किसी भी कारण से बदल जाता है। किन्तु भूगोल, इतिहास और राष्ट्रीय उपलब्धियां नही बदलतीं। रूस के कम्युनिष्ट टालस्टाय का सम्मान करते हैं, चीन के कम्युनिस्ट कन्फ्यूसियस का सम्मान करते है तो व्यास, बाल्मीकि, कालिदास आदि भारतवासियों के लिए भी सम्मान और आत्मीयता के पात्र है चाहे सम्प्रदाय या मजहब कोई भी हो हमारे देश के भी सभी अल्पसंख्यक अरब या जैरूसलम से नही आये हैं। एकाध प्रतिशत को छोड़कर सभी भारत की सन्तान है और यहां शत–प्रतिशत ही सबका इतिहास है।

मोहन लाल मगो
पी. –65, पाण्डव नगर
दिल्ली –110091

****

बहुत कम लोग जानते हैं 'ढाब खटीकाँ' की ऐतिहासिकता

आर्य जगत् पत्रिका में प्रकाशित समाचार पढ़ा "आर्य समाज लोहगढ़ में डी. ए. वी "ढाबं खटीका" द्वारा हवन किया गया, " "ढाबं खटीका" एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक स्थान अमृतसर में रहा है जिसे बहुत कम लोग जानते हैं।

बात उस समय है कि पंजाब में आजादी के दीवाने घरों से बाहर निकल कर सड़कों पर आजादी के लिए हर प्रकार का बलिदान करने के लिए तैयार थे। उसी समय अमृतसर में रोलट एक्ट को लेकर देश भर में तूफान मचा हुआ था। इंगलैंड की सरकार ने खूंखार व्यक्ति जनरल डायर को गवर्नर बना कर अमृतसर भेजा था।

अमृतसर मे खटीक समाज के लोगों ने अपनी एक बैठने कि जगह बनाई थी जिसका नाम "ढाब खटीकान" था जो आज भी है। यहाँ बैठकर खटीक समाज के क्रान्तिकारी नवयुवक आज़ादी के सम्बन्ध में चर्चा करते थे। इनमें निम्नलिखित व्यक्ति प्रमुख थेः–

1. श्री रामकिशन खीची
2. श्री जोगेन्दनाथ किराड़
3. श्री अमरनाथ भिलवारा
4. श्री गोरीशंकर बागड़ी
5. श्री जगन्नाथ राजौरा
6. श्री लालजीराम चौला

किसी मुखबर ने इन लोगों कि शिकायत पुलिस को दे दी। जब ये व्यक्ति ढाब खटीकन पर आज़ादी के बारे में चर्चा कर रहे थे तब पुलिस ने इन्हें गिरफतार कर लिया और 10–10 वर्ष कि कठोर सजा दी गई।

इस दुःखद घटना से सारे भारतवर्ष के खटीकों ने गहरा दुःख प्रकट किया। समाज के लोग आज तक इन बलिदानीयों को याद करते हैं।

(नोटः खटीक समाज के रत्न पुस्तक से)

मामचन्द रिवाड़िया
प्रधान महासचिव,
अ. भा. खटीक समाज (रजि.)
ए/सी–23, टैगोर गार्डन, नई दिल्ली–27

****

वृद्धों में दमा (सांस) रोग

वृद्धों में दमे का रोग व्यापक स्तर पर होता है। खान–पीन से बचाव की सलाह।

1. शीत ऋतु में तुलसी और अदरक के रस का प्रयोग सुबह शाम करें शहद के साथ।
2. ताजी सब्जियां और फलों का प्रयोग ज्यादा करें।
3. शीत ऋतु में सेब का प्रयोग ज्यादा लाभप्रद है।
4. वजन को कम करने का प्रयास करें।
5. भोजन सादा और ताज़ा होना चाहिए! यथा सम्भव भोजन को तीन या चार बार में ग्रहण करें।
6. डिब्बाबंद या फास्टफूड से परहेज करें।
7. चिकित्सकों की सलाह अवश्य लेते रहें।

कृष्ण मोहन गोयल
113–बाज़ार कोट, अमरोहा

****

बंगाल में बज गया डंका वेद प्रचार का

● वेद प्रकाश शास्त्री

सुदीर्घकाल की उपेक्षा उदासीनता, आलस्य प्रमाद और जड़ताग्रस्त ग्रामीण बंगाल में निष्क्रिय, निस्तेज एवं मृतप्राय आर्य समाजों को पुनः जागृत करने की कामना लेकर हमने पचासों बंगाली विद्वानों (बंगाल के अन्दर और बाहर) मिलकर एक संस्था बनाई, जिसका नामकरण बंगीय वेद प्रचार सभा किया गया। इस सभा ने विगत दिनों में मेदिनीपुर शहर में एक नूतन आर्य समाज की स्थापना की बंगीय वेद प्रचार सभा एवं मेदिनीपुर आर्य समाज के तत्त्वावधान में मेदिनीपुर शहर स्थित प्रसिद्ध विद्यासागर हाल में एक विशाल वेद प्रचार सम्मेलन 16–20 नवम्बर 2013 को बड़े ही धूम–धाम, उत्साह, उमंग और हर्ष के साथ मनाया गया, जिसमें मेदिनीपुर जिले के आर्य समाजों ने भाग लिया और इस सम्मेलन में कलकत्ता, आर्य समाज, बड़ा बाजार आर्य समाज हावड़ा आर्य समाज, आसन सोल आर्य समाज और भवानीपुर स्त्री आर्य समाज का उदार, अकृपण और स्वतस्फूर्त सहयोग के लिए हमें धन्य हैं।

समारोह में प्रत्यह योग शिविर, विश्व कल्याण महायज्ञ, वेद सम्मेलन एवं धर्म सम्मेलनों में आर्य जनता की अपार भीड़ उमड़ पड़ी। योग शिविर का उद्घाटन श्री चाँद रतन दम्माणी ने किया, अतिथि के रूप में श्री रमेश अग्रवाल थे प्रसिद्ध लेखक, चिन्तक श्री खुश हाल चन्द आर्य ने 'ओ३म् पताका' का उत्तोलन किया। समारोह का उद्घाटन, प्रसिद्ध समाज सेवी, मार्स लाई के मालिक, डी.ए.वी. शिलिगुड़ी के महासचिव श्री रोशनलाल अग्रवाल, मुख्य अतिथि श्री जगदीश प्रसाद केड़िया एवं विशेष अतिथि श्रीमती शशि नागपाल तथा श्री चाँद रतन दम्माणी ने दीप जलाकर किया। उपस्थित अतिथियों, विद्वानों, आर्य जनता और कार्य कर्त्ताओं का स्वागत, स्वागताध्यक्ष श्री श्रीराम आर्य ने किया एवं स्वागत मन्त्री श्री प्रमोद आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

दोपहर 2 बजे से 5 बजे तक विशाल शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा की सुव्यवस्था जनता की अपार भीड़, आस्था, शूमते, उत्साह देखते ही बनते थे गुरुकुल के ब्रह्मचारीगण और आर्य नर–नारी गाते और हुए घन्टों पदयात्रा में बिना थके घूमते रहे। शोभायात्रा में इस प्रकार लोगों का दीवानापन, अपार भीड़ देखकर कलकत्ते के श्री आनन्द देव आर्य आदि सज्जनों को कहते हुए सुना–हम कलकत्ता में लाखों रूपये खर्च करके भी ऐसी शोभायात्रा निकाल नहीं पाते हैं।

हर्ष की बात है कि इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री जगदीश प्रसाद केड़िया जी ने प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु की पुस्तक मौलिक भेद' का बंगानुवाद (पं.वासुदेव शास्त्री द्वारा कृत) प्रकाशित किया।

रात दिन एक करके, अक्लान्त परिश्रम, त्याग तथा तपस्या करके अर्थसंग्रह, भोजन–निवास आदि की व्यवस्था, जन प्रतिनिधियों से सम्पर्क आदि सम्मेलन की सारी व्यवस्था को एक सुन्दर सौष्ठव और वैशिष्ट्य पूर्णस्वरूप देकर सम्मेलन को सफल एवं क्रान्तिकारी बनाने में कलकत्ता आर्य समाज के श्री दीपक आर्य, श्री सुरेश अग्रवाल, श्री मधुसूदन शास्त्री और प. वेद प्रकाश शास्त्री का सर्वश्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। बंगाल में इस प्रकार समारोह देखकर सबके मुख से एक ही वाक्य निकलता था–न भूतः– न कभी हुआ, न कभी देखा,

मन्त्री–बंगीय वेद प्रचार सभा, कलकत्ता

☞ *पृष्ठ 6 का शेष*

नासदीय सूक्त ...

जीव (आसन्) हैं और (महिमानः) मुक्त जीव भी (आसन्) हैं (स्वधा) प्रकृति (अवस्तात्) नीचे और (प्रयतिः) परमेश्वर का प्रयत्न (परस्तात्) उसके ऊपर है।

भावार्थ–महान् विस्फोट के बाद जो स्थिति बनती है उसमें चारों और अनन्त दूरी तक प्रकाश फैल जाता है। कण और विपरीत कण आपस में टकरा कर एक दूसरे को तोड़ कर नए नए कणों की उत्पत्ति का कारण बनते हैं। सृष्टि का निर्माण आगे बढ़ता है। निहारिका मण्डल, सौर मण्डल आदि बन जाते हैं और फिर जैविक सृष्टि का बनना प्रारम्भ हो जाता है। कुछ वैज्ञानिकों का तो यह भी मानना है कि जीव की उत्पत्ति जड़ पदार्थों में ही कुछ विकार आने से होने लगती है परन्तु अधिकांश वैज्ञानिक इस मत से सहमत नहीं हैं। उनके अनुसार जीव की स्वतंत्र सत्ता है। इस ऋचा में भी यह बताया गया है कि जीव जो प्रलयावस्था में कारण रूप शरीर में अचेतन रूप से पड़े हुए थे। अब अपना स्थूल शरीर ग्रहण करने लगते हैं। प्रकृति के ऊपर परमेश्वर का प्रयत्न विद्यमान दिखाई पड़ता है।

अगली ऋचा में कहा गया है कि यह सृष्टि कैसे हुई है?

को अद्धा वेद का इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टि :।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथ को वेद यत आबभूव।। ऋ. 10.129.6

पदार्थ– (कः) प्रजापति परमेश्वर (अद्धा) निरवय से (वेद) जानता है, (इह) इस विषय में (कः) सुख स्वरूप वह परमेश्वर ही (प्रवोचत्) बताता है कि (कुतः) कहाँ से (आजाता) यह सृष्टि आई और (कुतः) कहाँ से (इयम्) यह (विसृष्टिः) विविध सृष्टि है। (देवाः) विद्वान् और इन्द्रियाँ आदि (अस्य) इस जगत् के (विसर्जनेन) रचने के (अर्वाक्) बाद में होते हैं। (अथ) अतः इनमें (कः) कौन (वेद) जानता है (यतः) जिसमें यह जगत् (आबभूव) उत्पन्न होता है।

भवार्थ– प्रजापति ईश्वर ही निश्चय से जानता है और इस विषय में सुख स्वरूप वह परमेश्वर ही बताता है कि कहाँ से यह सृष्टि आई और कहाँ से यह विविध सृष्टि हुई है। विद्वान् और इन्द्रियगण भी इस जगत् की रचना के बाद उत्पन्न होते हैं अतः इनमें से कौन जानता है कि जिससे यह जगत् उत्पन्न हुआ है।

एक प्रकार से यहाँ अनिश्चितता के सिद्धांत के आधार पर ठीक ही कहा गया है कि सभी विद्वान् सृष्टि उत्पत्ति के बाद ही उत्पन्न हुए हैं। अतः वे इस विषय को कैसे बता सकते हैं।

अगली ऋचा में संभावना सिद्धांत के आधार पर वर्णन है।

इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि दधे यदि वा न।
यो अस्याध्यक्षः परमेव्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ।। ऋ. 10.129.7

पदार्थ– (इयम्) यह (विसृष्टिः) विविध सृष्टि (यत) जिससे (आबभूव) उत्पन्न होती (वा) अथवा (यदि) जिसमें (दधे) धारित है उसको (यः) जो (अस्य) इसका (अध्यक्षः) अधिष्ठाता एवं (परमे) परमोत्कृष्ट (व्योमन्) प्रकाश स्वरूप में स्थित है (सः) वह अङ्ग ही (वेद) जानता है (वा) और (यदि) यदि दूसरा कोई जानता है तो वह (न) नहीं (वेद) पूर्णतया जानता है।

भावार्थ– यह सृष्टि कैसे और कहाँ से उत्पन्न हुई है। इसको केवल निर्माता परमेश्वर ही जानता है और यदि कोई दूसरा कहता है कि मैं जानता हूँ कि यह सृष्टि कैसे और कहाँ से उत्पन्न हुई तो वास्तव में वह नहीं जानता है। परन्तु वेद जिसे परमात्मा का ज्ञान माना जाता है और जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में भी बताया गया है। उसके आधार पर कोई सृष्टि उत्पत्ति के विषय में बतावे तो संभावना सिद्धांत के अनुसार वह सत्य हो सकता है।

हमने नासदीय सूक्त का जो अध्ययन किया है उसके आधार पर यह सिद्ध हो जाता है कि प्रलयावस्था कैसी थी और सृष्टि कैसे उत्पन्न हुई और सम्पूर्ण विवरण विज्ञान के अनुकूल है। इति शम्।

73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी
कोटा (राजस्थान) 324009

शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद, जिला बिजनौर (उ.प्र.) के प्रांगण में मुख्याधिष्ठात्री आचार्या प्रियम्वदा वेद भारती जी के नेतृत्व में 'शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षण शिविर' का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

इस अवसर पर समस्तीपुर, बिहार से पधारे आर्य भजनोपदेशक संगीताचार्य पं. दयानन्द सत्यार्थी द्वारा कन्याओं को स्वर–साधना का शास्त्रीय संगीत–माध्यम से सम्यक् अभ्यास कराया गया जिनके आधार पर पौराणिक गीतों को निरस्त कर वैदिक ईश्वर–भक्ति के भजन की रागों पर आधारित गायन शैली बतायी गई। भजन–गायन के साथ–साथ सरगम, तान, अलाप, आरोह–अवरोह, तराना आदि का ज्ञान कराते हुए तीन ताल का पूर्ण अभ्यास कराया गया तथा सुगम संगीत की भी शिक्षा दी गयी।

प्रथम बार इस तरह के शास्त्रीय गायन–प्रशिक्षण प्राप्त कर कन्यायें अभिभूत हुई। फलतः कन्याओं में संगीत–विद्या सीखने की निरन्तर उत्सुकता बनी रही तथा सबका ध्यान आकृष्ट हुआ।

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 01-02 /01/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

गेल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल की अनूठी पहल

गेल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल दिबियापुर जि. औरैया के कक्षा सात के लगभग सौ (100) छात्रों ने इस वर्ष बाल दिवस को अनूठे ढंग से मनाया। कक्षा सात के छात्र फफूँद क्षेत्र के गाँव केशमपुर के प्राईमरी स्कूल में पहुँचे और वहाँ अपने अध्यापक रवीन्द्र कुमार आर्य, श्रीमती शुभांगी दलाल तथा कु. शिखा मिश्रा के साथ बच्चों को गिफ्ट, कॉपी, पैन, पेन्सिल, लंच बॉक्स, आदि जरूरत का सामान बच्चों को प्रदान किया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य श्री आनन्द स्वरूप सारस्वत भी उपस्थित रहे, जिन्होंने बच्चों को विस्कुट, टॉफी आदि सामान भी भेंट किया।

इस प्रकार ग्रामीण आँचल में पल रहे उन बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाने की यह छोटी सी कोशिश विद्यालय द्वारा की गई। गेल डी.ए.वी. द्वारा समय–समय पर इस तरह के सामाजिक कार्य सम्पन्न कराए जाते रहते हैं।

डी.ए.वी. कहल गांव में सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी का भव्य आयोजन

डी.ए.वी.पब्लिकस्कूल,दीप्तिनगर, एन.टी.पी.सी., कहलगांव के प्रागंण में सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन एनटी.पी.सी. कहलगांव के माननीय महाप्रबंधक श्री प्रशांत कुमार महापात्रा के कर कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधक महोदय ने विद्यालय की नवनिर्मित कंप्युटर प्रयोगशाला का भी उद्घाटन किया। बच्चों ने इस अवसर पर स्वागत गान गाकर अतिथियों को भाव विभोर कर दिया।

इस प्रदर्शनी का आयोजन विद्यालय के बहुद्देशीय प्रशाल में किया गया जिसमें बच्चों ने उत्साह के साथ इतिहास, भूगोल अर्थशास्त्र एवं आपदाप्रबंधन पर आधारित विभिन्न मॉडलों का निर्माण कर अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया। महाप्रबंधक महोदय ने बच्चों द्वारा निर्मित मॉडलों में गहरी रुची दिखाई।

महाप्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में इस प्रकार के प्रदर्शनी के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया तथा बच्चों की रचनात्मक उर्जा एवं जल संरक्षण के प्रति चिंता पर प्रसन्नता व्यक्त की। अन्त में प्राचार्य श्री रमेश चन्द्र शर्मा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

डी.ए.वी. (इंटरनैशनल) अमृतसर में राज्य स्तरीय खेलों का आयोजन

डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल, अमृतसर में डी.ए.वी. राष्ट्रीय खेलों के अन्तर्गत अंडर–19 वर्ग में लड़कों की दो दिवसीय राज्य स्तर की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। इन खेलों में पंजाब भर के विभिन्न डी.ए.वी. स्कूलों के 560 खिलाड़ियों ने भाग लिया

खेलों के शुभारंभ के अवसर पर आयोजित भव्य समागम के मुख्य अतिथि माननीय श्री जे.पी.शूर, निदेशक डी.ए.वी. पब्लिक स्कूलज्–। एवं सहायता प्राप्त स्कूल, नई दिल्ली थे। विद्यालय के चेयरमैन माननीय श्री वी.पी. लखनपाल क्षेत्रीय प्रबन्धिका डॉ. प्रिंसीपल नीलम कामरा एवं प्रबंधक डॉ. के एन. कौल भी विशेष रूप से उपस्थित थे। प्रिंसीपल अंजना गुप्ता ने अतिथिगणों का स्वागत पुष्प गुच्छ भेंट करके किया। ज्ञान के प्रकाश का प्रतीक दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। स्कूल के विद्यार्थियों ने डी.ए.वी. गान से रंगा–रंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रारम्भ किया।

मुख्य अतिथि श्री जे. पी शूर ने उपस्थिति को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यालय स्तर पर खेलों में भाग लेने वाले विद्यार्थी ही आगे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय् स्तर पर अपनी प्रतिभा को प्रमाणित करते हैं। यही वह समय है जब बच्चा अपनी प्रतिभा को पहचान कर उसे निखारने का सफल प्रयास करता है।

विद्यालय के चेयरमैन डॉ. वी.पी. लखनपाल ने उपस्थित जनों को धन्यवाद दिया और खिलाड़ियों को शानदार प्रदर्शन के लिए शुभ कामनाएं दी। दो दिन तक चलने वाली प्रतियोगिताओं में लड़कों की 18 विभिन्न खेलों के मुकाबले हुए।

खेलों के समापन समारोह के अवसर पर माननीय श्री बख्शी राम अरोड़ा, मेयर नगर, अमृतसर मुख्य अतिथि थे।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्कूल के विद्यार्थयों ने क्वाली और पंजाब का लोक नृतय भंगड़ा प्रस्तुत कर सबका मन मोह लिया।

राज्य स्तरीय इन प्रतियोगिताओं में जालंधर जरेन से पुलिस डी.ए.वी. स्कूल से जालधर प्रथम स्थान पर रहा और अमृतसर जोन से डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल प्रथम रनअप रहा।

विद्यालय के प्रबंधक डॉ. के. एन.कौल ने भी विजेताओं को बधाई दी।

इस अवसर पर स्थानीय डी.ए.वी. प्रबंधकीय समिति के सदस्य एवं विभिन्न विद्यालयों के प्रिंसीपल उपस्थित थे।

डी.ए.वी. स्कूल पूण्डरी एथलैटिक्स में बना ओवर ऑल चैम्पियन

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पूंडरी छात्रों ने डी.ए.वी. राष्ट्रीय खेलों में एथलैटिक्स में सबसे अधिक पदक जीतकर ओवर ऑल ट्रॉफी पर अपना कब्जा किया। डी.ए.वी. प्रबंधक समिति द्वारा आयोजित हेली मंडी (गुड़गांव) में हुए कलस्टर स्तर पर इन खेलों में कैथल व गुडगांव जोन के सभी स्कूलों की टीमों ने भाग लिया, जिसमें डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के छात्रों व छात्राओं ने एथलैटिक्स में रिले रेस सहित 20 स्वर्ण, 6 रजत व 6 कांस्य पदक जीते, जूडो में तीन स्वर्ण, कबड्डी में स्वर्ण, योगा पुरुष टीम ने स्वर्ण, योग महिला वर्ग में रजत पदक व खो–खो में रजत पदक प्राप्त किए। डी.एवी. पब्लिक स्कूल की प्राचार्य श्रीमती साधना बख्शी जी ने सभी व खेल प्रशिक्षकों को इस प्रशसनीय उपलब्धि पर बधाई दी एवं भविष्य में इस तरह के प्रदर्शन की आशा व्यक्त की। इस अवसर पर शारीरिक प्राध्यापक सुशील कुमार, प्रिंस गिरधर, कोमल चौधरी, प्रशिक्षक दिलबाग सिंह व अंजलि शर्मा उपस्थित थे।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**